-: द्वितीय अध्याय :-

"निमिषा" उपन्यास की कथावस्तु का विवेचन।

अश्क जी का "निमिषा" उपन्यास सन १९८० में प्रथम पुस्तक रूप में प्रकाशित हुआ है मगर उससे पूर्व यह "साप्ताहिक हिन्दुस्थान" में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुका है। यह उपन्यास छः खण्ड और इक्कीस अध्यायों में विभाजित तथा तीन सौ सतरह पृष्ठों में लिखित है।

अश्क जी की कोई भी कृति जब हम हाथ में लेते है तब यह महसूस करते हैं कि इसे पहले भी कहीं हमने पढ़ा है। अश्क जी स्वयं अपनी कृति में उपस्थित हैं। उन्होंने "गिरती दीवारें", "शहर में घूमता आईना", "एक नन्हीं किन्दील", "बांधो न नांव इस ठांव" आदि में चेतन बनकर "निमिषा" में गोविन्द बनकर आपबीती ही सुनायी है। अश्क जी सिर्फ नाम बदल-बदल कर अपनी कृतियों में स्वयं उपस्थित हैं। "निमिषा" उपन्यास का नायक गोविन्द अश्क ही हैं। अश्क जी की प्रथम पत्नी शीलाजी ही "निमिषा" की लक्ष्मी है तो उनकी दूसरी पत्नी माया ही माला है तथा नायिका "निमिषा" ही कौशल्या अश्क है। इसका कथानक प्रथम पत्नी शीलाजी की मृत्युपरांत से लेकर उनके जीवन में कौशल्या जी का प्रवेश तथा द्वितीय पत्नी माया जी से सगाई विवाह और विच्छेद तक का है। इस उपन्यास में अश्क जी के अन्य उपन्यासों की तरह पात्रों की भरमार नहीं दिखायी देती। इसमें प्रमुख पात्रों के रूप में "गोविन्द", "निमिषा" तथा "माला" ही केन्द्र बिन्दु हैं और कथानक भी इन्ही पात्रों के बीच गुंथा गया है। बाकी पात्र सहायक या गौण रूप में ही आते हैं।

निमिषा का बचपन :-

उपन्यास के कथानक का आरंभ नायिका निमिषा से होता है।

उसके बी.टी. का रिजल्ट आ गया है और वह सिर्फ पास हो चुकी है। हर समय अव्वल आनेवाली निमिषा सिर्फ पास हो गयी है इसका उसे बेहद खेद हो रहा है क्योंकि वह परीक्षा के समय बीमार हो जाने के कारण सिर्फ पास हो गयी है। उसके चाचा ने उसे ड्राप करने को कहा भी था, मगर निमिषा अपने जीवन का एक वर्ष न गवांकर जल्द पढ़ाई खत्म करके चाचा-चाची पर बोझ न बनकर खुद के पैर पर खड़ी हो जाना चाहती है। अब उसे एक ही चिंता है कि समाचार पत्र में जरूरत के कॉलमों पर ध्यान देकर आवेदन-पत्र भेजते रहना।

जब उसे कहीं से भी कॉल नहीं आया तब वह बेचैन बन गयी। अपने फ्लॅट से उतरकर बस अड्डे पर जाने के लिए फुट-पाथ पर खड़ी किसी खाली तांगे का इंतजार कर रही थी कि उसे सामने से उसी फुट-पाथ पर गोविन्द आता दिखायी दिया। गोविन्द को देखकर उसका दिल धड़कता है वह उसके सामने से निकल जाता है। निमिषा उससे बात करना चाहती है लेकिन वह ठगी-सी फुट-पाथ पर उसे देखती खड़ी रह जाती है। गोविन्द एक चित्रकार और लाहौर का उभरता हुआ युवा कवि है। निमिषा ने उसकी सहेली कनक के साथ लाजपत राय हाल में एक मुशायरे में गोविन्द की दर्द भरी एक गजल सुनी थी तब से वह गोविन्द की फॅन बन गयी थी। गजल उसके दिलो-दिमाग पर पूरे तरह से छा गयी थी। तभी उसे उसकी सहेली कनक से मालूम हुआ था कि गोविन्द की पत्नी की मृत्यु हो गयी है और उसने उसी पत्नी की याद में प्रस्तुत गजल सुनायी थी -

" गैर हालात है तेरे बीमार की
आज तो रहने दो हीलाबाजियॉ
वक्त-ए-आखिर है, तसल्ली हो चुकी
अब करेगी मौत चारासाजियॉ
जीत जाते साथ देता गर फलक
"दर्द" हम ने हार दीं सब बाजियॉ" ?

? "अश्क" - "निमिषा", पृष्ठ - १९

यह गजल दर्द भरी आवाज में जब निमिषा ने सुनी तो एक प्रकार का लगाव ही उसके मन में गोविन्द के प्रति उत्पन्न हो जाता है। गोविन्द से वह मिलना चाहती है और उसे पत्नी की मृत्यु की सांतवना देकर उसके गजल की तारिफ भी करना चाहती है मगर गोविन्द पहले ही हॉल से चला जाता है। वह कनक से उसे गोविन्द से मिलाने की बिनती भी करती है। कनक हॉं कहकर टाल देती है और चित्र-प्रदर्शनी में मिलाने का वादा करती है मगर मिलाती नहीं। जब कनक गोविन्द के गजल की खिल्ली उड़ाती है तब निमिषा को दु:ख भी होता है और वह कहती है कि जिस पर बीती है वह ही उस गजल का मर्म जानता है। और आगे कहती है कि तुमने न कभी किसी से प्यार किया है, न प्यार का आघात सहा है तो तुम कुछ नहीं जानतीं। तभी निमिषा को स्मृति रूप में अपने बचपन की याद हो आती है कि उसके पिता मिलिट्री एकाउटेण्ट थे और जब वह दक्षिण में त्रेवन्द्रम् छावनी में थे, जब उसकी माँ को आँतो की शिकायत रहने लगी और अन्त में यह भी जान गये की उसकी माँ कुछ दिन की मेहमान है तो वह आघात सह न पाये। पत्नी के बीना जीने की उसके पिता कल्पना ही न कर सकते थे। अंत में छुट्टी लेकर लाहौर आये और वहां से माँ को पिता उसके मायके शेखुपुरा ले गये थे। और भाग-दौड़ कराके अपनी बदली पंजाब के डलहौजी छावनी में करा ली और वहीं पर पिता की मृत्यु अति चिंता के कारण बीस-बाईस दिन में ही हो गयी। डॉक्टरों के लाख प्रयत्न के बावजूद बच न पाये। एक महिने के बाद निमिषा की माँ भी उसे छोड़ परलोक सिधार गयी। मृत्यु से पहले निमिषा की माँ ने अपने देवर याने निमिषा के चाचा को बुलवाकर निमिषा का हाथ उनके हाथ में देकर कहां कि जब कभी निमिषा संकट में हो तो उसे लेजाकर पढ़ा-लिखा कर योग्य बना देना। और चाचा ने वादा भी किया।

निमिषा फिर अपने अतीत में खो जाती है कि कितना बड़ा था उसका परिवार - कितने बड़े थे उसके सगे-संबन्धी। उसके स्वर्गीय दादा वच्छेवाली लाहौर के साहूकार थे, माल रोड पर उसके फूफा की जनरल मर्चेण्डाइज की बहुत बडी दुकान थी, नाना शेखुपुरे के बहुत बड जमींदार थें, मामा-मौसा विलायत हो आये थे, लेकिन महिने भर के अंदर-अंदर माता-पिता उसे छोड़कर चले गये तो उसकी स्थिति हीरे-मोतियों में घिरे ऐसे व्यक्ति-सी हो गयी थी, जिसे किसी चीज को छूने का अधिकार न हो। डेढ़ साल बाद उसके नाना भी दिवंगत हो गये और मामा लोगों में जायदाद को लेकर झगड़ा हो गया था। आगे दो वर्ष बाद नानी का भी देहावसान हो गया तो वह फूटबॉल के तरह इस मामा से उस मामा के आँगन में फेंकी जाने लगी। निमिषा कभी-कभी आत्म-हत्या करने का या कहीं भाग जाने का भी सोचने लगी। अंत में हारकर उसने लाहौर में अपने एडवोकेट चाचा को पत्र लिखा कि वे उसे आकर ले जायें।

निमिषा चाचा के साथ लाहौर आ जाती है और उसकी छूटी हुई पढ़ाई फिर से शुरू हो जाती है। निमिषा हर साल अव्वल आती है। मैट्रिक और एफ.ए. मे भी वह प्रथम श्रेणीमें पास होकर छात्रवृत्ति भी पाती है। चाचा की वकालत काफी जोरों से चल रही थी। तभी उनकी एक मुवक्किल जागीरदारिनी सुरिन्दर कौर की लड़की रूपिन्दर कौर (रूपेन्द्र कुंवर) जो अपनी माँ के साथ दफतर आया करती थी। उसके चाचा से प्यार करने लगी। उसकी सगाई एक बहुत बडे जागीरदार घराने में हो चुकी थी। वह बहुत सुन्दर और पढ़ी-लिखी थी। और वह निमिषा को मन-ही-मन बड़ी प्यारी भी लगती थी। निमिषा ने उसे मन-ही-मन चाची के रूप में देखा भी था। रूप भी उसके चाचा से चुपचाप शादी करने को कहती भी थी और एक दिन भाग कर उसके चाचा के घर भी आयी थी मगर चाचा हिकमत राय के व्यावहारिक नैतिकता को यह स्वीकार न था कि वहन अपने मुवक्किल को धोखा दें। अन्त में रूप की शादी वहीं हो गयी जहाँ उसकी सगाई हो गयी थी। वह अपने दुल्हे के साथ हनीमून मनाने पेरिस

चली गयी थी। वहीं से एक दर्द भरा खत निमिषा के चाचा को मिला था। तब चाचा ने अचानक शादी करने का फैसला किया। अमृतसर के जिस रिश्ते को दो साल से अस्वीकार कर रहे थे, उन्होंने स्वीकार कर लिया।

चाचा के इस शादी करने के अचानक फैसले से निमिषा को धक्का-सा लगा था। क्योंकि चाचा कहते थे कि वह एम्.ए. कर ले फिर मैं शादी करूँगा। रूपेन्द्र की जगह आयी चाची को देखकर निमिषा का मन उसे चाची के रूप में अस्वीकार ही करता है क्योंकि एक लम्बी-ऊँची, गदराये दोहरे बदनवाली, अधमद्द और फूहड़ युवती लगती है बावजूद उसके गोरे रंग और बड़ी-बड़ी आँखें। बहुत जल्द पता चल गया कि उसकी चाची छोटे दिल की, अपने ओछे स्वभाव और फूहड़ता को फैशन में छिपानेवाली, सलीके और नफासत से कोसो दूर है। होटलो में खाना, सिनेमा देखना और देर तक सोना पसन्द था।

निमिषा और चाची में अनबन हो जाती है क्योंकि चाचा का इतना लाड़-प्यार देखकर यह सब चाची को अच्छा नहीं लगता। चाची कहती है कि अब निमिषा जो कुछ भी माँगती है वह चाचा के बजाय चाची से माँगकर ले क्योंकि चाची का भी कुछ अधिकार है। यह सब निमिषा को स्वीकार्य नहीं था। चाची के कुंवर को फोटो निकाल कर टेबल पर रखती है और उसे हर-रोज फूल चढ़ाती है, यह सब देखकर चाची गुस्सा होकर चाचा से कहती है और चाचा भी गुस्से में आकर उसे उलटा-सिधा कहते हैं और यहाँ तक भी कहते है कि वह अगर चाहे तो उसकी गार्जियनशिप छोड़ देंगे। निमिषा गुस्से में घर से निकल कर सीधे प्रिंसिपल मिसेज शर्मा के घर आती है और उन्हें सब हकिकत बताती है। तब मिसेज शर्मा निमिषा का बयान सुनने के बाद उसे उसके गलती का एहसास दिलाती है और फिक्र न करने को कहती है। मिसेज शर्मा निमिषा को कहती हैकि वह जाकर अपनी गलती चाचा से स्वीकार करके माफी माँग ले और एक मौका उसे दे दिया

जाय यह कहने को कहती है। अगर इस पर भी चाचा न माने तो मिसेज शर्मा खुद उसकी गार्जियनशिप ले लेगी। अंत में निमिषा वापस घर आकर चाचा से माफी मांगकर अपनी गलती स्वीकार करती है तब चाचा भावना विव्हल होकर निमिषा को माफ कर देते है। मगर निमिषा एम.ए. के बजाय बी.टी. करने का फैसला करती है क्योंकि वह जल्द ही अपने पैरों पर खड़ी हो जाये। इस प्रस्ताव को चाचा भी स्वीकार कर देते है।

निमिषा को प्रिंसिपल मिसेज शर्मा के घर आये आठ दिन हो गये थे और अचानक उसकी सहेली कनक का फोन आता है। उसे कनक से पता चलताहै कि लांरेग्ज में चित्र-प्रदर्शनी है और कनक उसे साथ ले जाना चाहती है। यह सुनकर निमिषा के सामने गोविन्द की सूरत घूम गयी। चित्र-प्रदर्शनी में गोविन्द से मिल ने का मौका उसे चलकर आया था। थोडी देर बाद मिसेज शर्मा आयी तो निमिषा ने वापिस जाने की बात कही और प्रदर्शनी के बारेमें भी बताया। दूसरी बात यह भी थी कि वह गोविन्द से मिलने को इसलिए भी ज्यादा उत्सुक थी कि उसने कई जगह अर्जियाँ भेजी थी और न जाने कहीं से कॉल आ जाय तो वह बाद में मिल सकेगी या नहीं यह कुछ कह नहीं सकती थी।

पहले दिन चित्र-प्रदर्शनी का उद्घाटन चीफ जस्टिस के हाथों हुआ था। आर्टिस्टों में खान अब्दुलरहमान चुगताई और एमकृष्ण दम्पति आये थे। चित्र-प्रदर्शनी में चुगताई साहब के बेहतरीन तीन चित्र लगे थे। कृष्णजी और उनकी फ्रान्सीसी पत्नी मादाम के भी चित्र थे साथ ही साथ गोविन्द और कनक के भी तीन-तीन चित्र लगाये गये थे। गोविन्द का उसकी स्वर्गीय पत्नी का चित्र लाजवाब था। चुगताई साहब के तीनो चित्र बिक गये थे। कनक के भी चित्र बिक गये थे। निमिषा दो दिन से प्रदर्शनी में गोविन्द के दर्शन के लिए तडप रही थी मगर वह नहीं आया था। मन ही मन निमिषा को गोविन्द पर गुस्सा भी आ रहा था कि कैसा कलाकार है जो चित्र तो भेज दिए मगर खुद नहीं आ सका। निमिषा

के मन में भी गोविन्द का एक चित्र खरीदने की इच्छा उत्पन्न हो गयी मगर चित्र बिकाऊ नहीं है यह मालूम होकर थोडी निराशा भी हुई पर साथ ही साथ उस कलाकार और उसकी कला पर नाज भी हुआ। गोविन्द तिसरे दिन शाम के समय अपने मित्रों के साथ आया और थोड़ी देर रूककर चल दिया। न निमिषा उससे बात करने की ठाढ़स कर सकी न कनक ने गोविन्द से उसका परिचय करवाया। निमिषा निराश होकर कनक पर नाराज होकर वापिस लोट आयी। पास जाते समय कनक ने निमिषा से वादा किया कि वह उसे ईतवार के दिन गोविन्द के घर ले जाकर उसका परिचय गोविन्द से करवायगी।

निमिषा को एक साथ दो जगह से साक्षात्कार के लिए बुलावे आ गये। एक लाहौर से ही हाईस्कूल की अध्यापिका का तो दूसरा रेनाला, जिला मिण्टगुमरी से प्रायमरी स्कूल की हेड मिस्ट्रेस का। निमिषा रेनाला ही जाना पसंद करती है क्योंकि वह अपनी चाची और तमाम सगे-सम्बन्धियों, मित्र-परिचितों तथा एक मात्र सहेली कनक से भी नाराज थी। जब वह जाने से पहले कनक से मिलती है तब कनक उसे साथ लेकर गोविन्द के घर उससे मिलवाने के लिए जाती है मगर वहां जाने पर पता चलता है कि गोविन्द देवनगर ड्रॉइंग टीचर की नौकरी मिल जाने के कारण चला गया है। तब वह उसके भाभी से उसके केमिस्ट भाई के दुकान का पता लेकर वहाँ जाती है और गोविन्द के भाई से उसका पता लेती है। रेनाला जाने के बाद गोविन्द को पत्र लिखने की आस मन में लिए चली जाती है। यहाँ पर उपन्यास का पहला खण्ड समाप्त हो जाता है।

निमिषा के जीवन में गोविन्द का प्रवेश :-

दूसरे अध्याय का आरंभ निमिषा के पत्र से हो जाता है। निमिषा रेनाला आ गयी है। निमिषा ने गोविन्द को पत्र लिखा है उसमें उसने अपना परिचय दिया है और अपना उद्देश्य भी लिखा है कि

उसे चित्रकला का शौक है और वह गोविन्द को गुरू बनाकर वह उसकी शागीर्द बनना चाहती है। चित्रकला के साथ-साथ वह कविता भी करती है और उसे शेरो-शायरी से भी लगाव है। और पत्रों के माध्यम से ही निर्देश करने की बिनती करती है। निमिषा का पत्रा पाने के बाद गोविन्द भी उसके पत्र का जवाब दे देता है और निमिषा कविता भी करती है, इस पर अपनी खुशी प्रकट करता है। बाद में निमिषा जवाबी पत्र लिख देती है। दोनों का पत्र-व्यवहार शुरू हो जाता है। दोनों एक-दूसरे को पत्र के माध्यम से अपनी आप-बीती सुनाते हैं। निमिषा इस बात पर खेद भी व्यक्त करती है कि हम दोनों लहौर में होते हुए भी एक-दूसरे से परिचय न पा सके। और यहीं से दोनों पत्र में एक-दूसरे के भावनाओं को उकेरते रहते हैं और छुट्टी के दिन लाहौर में मिल जाने के बाद अपनी-अपनी आप बीती सुनाने का तय करते हैं। पत्र में कभी निमिषा अपने आस-पास के सुन्दर वातावरण का वर्णन लिखकर गोविन्द को रेनाला आने का आमंत्रन दे देती है तो कभी गोविन्द निमिषा को। गोविन्द निमिषा को चित्रकला और उसकी बारकियों के बारेंमें जानकारी देता है और हौसला न हारकर बड़े परिश्रम की अपेक्षा व्यक्त करता है।

निमिषा और गोविन्द पत्रों के माध्यम से एक दूसरे के काफी करीब आ जाते है वह दोनो एक दूसरे के पत्र में क्या उल्लेख करें., तब निमिषा गोविन्द को भाई कहती है तो गोविन्द उसे इस रिश्ते पर आपत्ती उठाता है। गोविन्द कहता है कि वह एक कमजोर आदमी है उसे सगी बहन तो नहीं है और न उसने बहन का प्यार पाया है, न दिया है। दुनियादारी की कुछ मिसाले भी देकर भैय्या कहने पर रोक लगाता है। गोविन्द निमिषा को लाहौर में उसके साथ घटे एक स्कैण्डल की बात बताता है कि उसके साथी टीचर की बहन को चित्रकला का शौक था। उस साथी टीचर ने गोविन्द से बिनती की कि वह उसके बहन को कुछ मार्गदर्शन करें। गोविन्द मान जाता है। उस साथी टीचर की बहन

गोविन्द को भैया कहती है। गोविन्द चन्द दिनों के बाद जानता है कि उस लड़की को चित्रकला में कोई लगाव नहीं है और वह मार्गदर्शन करने से इन्कार करता है तब वही लड़की गोविन्द पर इल्जाम लगाती है। साथी टीचर भी उसकी बहन के साथ गोविन्द को शादी करने के लिए जोर देता है। तब गोविन्द कहता है कि वह दोस्त की बहन को अपनी बहन मानता है। गोविन्द इस स्कैण्डल से बचने लिए झूठ बोलने पर मजबूर हो जाता है कि उसकी सगाई हो गयी है। और इस स्कैण्डल से बचने के लिए उसने भाई से कहलवा के दूर के रिश्ते से जन्दबाजी में सगाई भी करायी है। न उसने लड़की देखी है न नाम जाना है। अब उसे इस सगाई से पछतावा हो रहा है और भावी पत्नी से आशंका भी व्यक्त करता है। और यह भी कहता है कि उस स्कैण्डल से बचने के लिए लाहौर की नौकरी तक छोडकर इस वीराने वह चला आया है। निमिषा से भैया न कहने को कहता है। भाई के जगह दोस्त बनाने को कहता है। पहली पत्नी और उसकी मौत की दर्दभरी कहानी वर्णित करता है और कहता है कि जब तक वह जीवित रही तब, तक उसे सताया। मगर उसके मौत के बाद पता चला कि उसने अनमोल खजाना खोया है। पहली पत्नी लक्खी के स्वभाव का भी गुणगान करता है।

निमिषा रेनाला के अगले पत्र में लिखती है कि वह अगले शनिवार लाहौर जा रही है। अगर गोविन्द को छुट्टी मिल सकती है तो वह भी लाहौर आने की कोशिश करे। स्कूल का कुछ सामान खरीदना है और नक्शे भी ठीक कराने है। सामान साथ मिलकर खरीदने और कुछ मन को उकेरने की बात भी कहती है। जब निमिषा घर से निकल कर स्टेशन पर आती है तब गाडी छूट जाती है और काफी परेशानी के बाद उसे लाहौर तक आने के लिए ट्रक मिल जाता है। ट्रक में बछड़े बंधे होने के कारण गोमूत्र और गोबर के बू की परेशानी भरा प्रवास होकर भी लहौर पहूँचने पर खुश होती है। घर आकर नहाती है तब थोडी दे बाद गोविन्द का भाई आकर

गोविन्द लाहौर आने की इत्तला देता है और घुटने के घाव के बारमें बताता है तब निमिषा कुछ परेशान होती है। घर से सीधा गोविन्द के भाई के दुकान पर गोविन्द से मिल कर खुश होती है। गोविन्द के साथ उसके मित्र सुखबीर संधू के घर जाकर देर रात तक गोविन्द की आपबीती सुनती है। वहां से घर जाते समय कल मिलने का वादा करती है। जब दूसरे दिन गोविन्द से मिलती है तब बैठकर कुछ मन की बातें करना चाहती है तब बीच में ही कवि "जर्जर" आ टपकता है तो वहां से उठकर गोविन्द के घर जाती है उसके प्रथम पत्नी की फोटो देखती है। उसकी स्तुती भी करती है। तब गोविन्द अपनी सगाई और भावी पत्नी से आशंका व्यक्त करता तब वह गोविन्द को धीरज बांधने की सलाह देकर सब ठीक हो जायेगा कहती है। मगर गोविन्द कहता है कि यह सगाई मुझे किसी अंधेरे गर्त की तरह महसूस हो रही है, तब निमिषा गोविन्द को सगाई तोड देनी की राय देती है। गोविन्द से देवनगर आकर मिलने का वादा करते हुए चल देती है। यही पर दूसरा अध्या समाप्त हो जाता है।

जब निमिषा अपने अतीत में झांक कर देखने लगी तो उसे याद आया कि अब उन चन्द मुलाकतों के अलावा ढेर सारे पत्रों का आदान-प्रदान उन दोनों में हो गया था। और उनके पत्रों में से काव्य और कला की बात तो जैसे गायब ही हो गयी हो, और उनमें अब उसका कोई अस्तित्व ही न रहा गया था। एक दूसरे को अपना सके यही बात उनमें प्रमुख हो गयी थी। निमिषा यह भी सोच रही थी कि वह क्यों गोविन्द की ओर इतनी खिंची चली जा रही है। कलाकार तो वह अच्छा है, लेकिन खान-पान, वेष-भूषा, आचार-व्यवहार में उससेम एकदम उलटे सिर का है। निमिषा की रूचि उत्पन्न परिस्कृत थी और गोविन्द मुँहफट, फक्कड़, और उसकी दृष्टि में कूहड़ था। उसे वह दुलमुल, असंमजसा और दुविधा तथा इच्छा-शक्ति से रहित लगता था। निमिषा के नजर में गोविन्द, "कभी-कभी वह उसे निहायते मजबूर और कमजोर लगता था और दिलचस्प

बात यह थी कि उसकी इसी कमजोरी पर उसे प्यार हो आता था।"[1] निमिषा की यह इच्छा थी कि वह दुविधा छोड़ कर पक्का निर्णय ले - चाहे वह उसे अपनाये या न अपनाये, पर वह खुद तो सुख रहे।

गोविन्द निमिषा को एक पत्र में कहता है, "जाने कैसे और क्यों तुम्हारे सामने मेरा हृदय एकदम निरावरण हो गया और जैसे अपने आपको अकेला महसूस करने वाला कोई बच्चा अचानक किसी हमदर्द को पा कर अपने टूटे-फुटे, पुराने-धुराने सभी खिलौने एक-एक करके उसे दिखा दे, मैंने भी तुम्हारे सामने अपना सबकुछ रख दिया। कुछ भी तो नहीं छिपाया।"[2] गोविन्द को यह कभी-भी गवारा न था कि वह हर किसी के सामने यूँ आवरणहीन हो जाय। मगर खुद को भी टटोलता है कि वह निमिषा के सामने कैसे इतना खुल गया। निमिषा गोविन्द को मन से अपनाना चाहती है मगर गोविन्द का मन दो धारी तलवार की तरह है, न उसे अपनाना चाहता था और न छोड़ना। उसे डर था कि वह बड़े घर की है, उसकी रूचियाँ, इच्छाएँ, आशा-आकांक्षा, रहन-सहन उसके स्तर से कहीं उँची है। मगर निमिषा अपने पत्रों में बार-बार दोहराती है कि यह कोई बाधा नहीं है, अगर वह चाहे तो वह उसके अनुरूप अपने-आपको ढाल लेगी। मगर गोविन्द को निमिषा से तीन बातों की शिकायत थी कि वह खर्च बहुत करती है, चाय बहुत पीना और अपने स्वास्थ्य की तरफ से नितान्त बेपरवाह रहना आदि। मगर गोविन्द फिर भी निमिषा के कार्यकुशलता और व्यावहारिक क्षमा से बहुत प्रभावित हुआ था। गोविन्द निमिषा को एक पत्र के साथ एक चित्र भी भेजता है कि जिसका प्रतीक है - एक क्षण घाटी की तंग गहराई में पंख-नुचा असहाय पड़ा है। उसके निकट एक क्षणी फड़फड़ा रही है। वह बेबस पक्षी जिन कातर निगाहों से उस उत्सुक क्षणी को देख रहा है। यह चित्र देखकर निमिषा का मन कचोट जाता है और

---

१ "अश्क" - "निमिषा, पृष्ठ - १२८

२ "अश्क" - "निमिषा, पृष्ठ - १२९-३०

वह मन ही मन कहती है कि अगर खग उड़ना चाहे तो वह खगी उसे उड़ा सकती है। खगी याने नारी तो आखिर में कमजोर ही होती है, वह तो पुरूष से ही सहयता की आशा करती है।

निमिषा को गोविन्द के निर्णय का इंतजार था, क्योंकि उसके स्कुल के सेक्रेट्री चौधरी साहब ने उसके लिए रेनाला का ही एक रिश्ता ले आये थे, लड़का लाहौर विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ता था। उन्होंने प्रोफेसर ध्यान का गुणगान शुरू कर दिया था। प्रो. ध्यान की बहन भी आकर निमिषा को देखकर पसंद कर गयी थी। निमिषा को डर था कि अगर गोविन्द इन्कार करेगा तो, उन लोगों का जोर बढ़ता जायेगा। वह चाहती थी कि गोविन्द निर्णय ले ले तो उन लोगों से उसका पिण्ड छुट जायेगा। और अंत में गोविन्द निर्णय लेकर निमिषा को लाहौर आ जाने के लिए कहता है।

निमिषा लाहौर आ गयी है और वह कुछ हलकासा नाश्ता करती है, मगर गोविन्द को मिलने के खुशी में उसके तन-बदन में उमंग की लहर दौड़ रही थी। खुशी के मारे वह गीत भी गुनगुनाती है। निमिषा तैय्यार होकर गोविन्द को मिलने के लिए निकल पड़ती और जाते-जाते चाची से कहती है कि वह स्कूल का कुछ जरूरी सामान खरीदने जा रही है और वह लोग भोज्न पर उसका इंतजार न करें। जब वह फुटपाथ पर आती है तब उसे गोविन्द के साथ बिताये रेनाला के और देवनगर के दिन याद आते हैं। दोनों पास-पास बैठकर बाता-चित्र करते रहे मगर कभी-भी गोविन्द ने निमिषा से कोई अनुचित हरकत नहीं की थी। दोनों ने एक-दूसरे के हाथों में हाथ थामकर बातें जरूर की मगर उससे आगे बढ़ने की कोशिश उसने कभी न की थी। निमिषा को एम्.ए. का एक किस्सा याद आया कि उसकी एक सहेली अनु थी जो निमिषा हमेशा उसके घर जाया करती थी तब उसका भाई जो नया-नया डॉक्टर बन गया था वह निमिषा के आस-पास मँड़राता

था और निमिषा भी उससे स्नेह करने लगी थी। एक दिन निमिषा जब अनु के घर गयी तब वह डॉक्टर भाई ही अकेला घर में आराम कर रहा था। निमिषा उसके पास बातें करती हुई जा बैठी तब उसने निमिषा को अपने पास खींचकर चूमा और आगे बढ़ने की कोशिश की तब निमिषा उससे अलग हो गयी और निमिषा ने उससे कहा कि वह निमिषा के चाचा से उससे शादी करने की बात करें मगर उसने कहा कि वह निमिषा से सिर्फ प्यार करता है और प्यार का शादी से कोई मतलब नहीं होता। उसने आगे बढ़कर निमिषा को फिर छेड़ने की कोशिश की तो निमिषा ने उसे जोरों का थप्पड़ रशिद कर चली आयी तो फिर कभी वहां नहीं गयी। मगर वह गोविन्द के साथ रही लेकिन उसने कभी-भी ऐसी अनुचित हरकत न की। इसी कारण भी गोविन्द उसके नजरों में ऊँचा उठ गया था। गोविन्द के विचार ऊँचे थे। वह कहता था कि पशु-पक्षी तिनका-तिनका इकट्ठा कर घोंसला बनाना, अण्डे देना, बच्चे पालना यहीं उनकी दिनचर्या होती है। मगर मनुष्य जो उनसे हटकर होता है पेट और सेक्स के अलावा जमीन और आसमान, भूत और भविष्य की भी सोचता है, सब कुछ मटियामेट कर देने वाले समय के सीने पर ऐसक नक्शे छोड़ने की, जो अमिट और अमर रहें। गोविन्द के भाईसाहब उससे कहते कि उसकी होनी वाली पत्नी निमिषा से भी गोरी है। सुन्दर औरतें और गद्देदार कुर्सियाँ कलाकारों को ले डूबती है। उसे सुन्दर न सही लेकिन उसके कलाको बढ़ावा देकर ऊँचे उठाने वाली पत्नी चाहिए। वह सब गुण गोविन्द निमिषा में देख पाया था। मगर निमिषा की इच्छा थी कि अगर गोविन्द शादी के लिए हां कह दे तो वह उसे धोबियों की गली के इस वातावरण से निकाल ले जाऊँगी। वह देवनगर न रहना चाहेगा तो वह भी उसके साथ लाहौर आ जायेगी और वह लाहौर में ही नौकरी कर लेंगो। निमिषा गोविन्द को साथ लेकर कृष्णनगर या रामनगर जैसी खुली आबादी में घर लेंगो और वह गोविन्द के लिए इतना सुन्दर स्टुडियो बना देंगो कि वहाँ जाते ही उसका जी चित्र खींचने को हो आये।

गोविन्द का निमिषा से चोरी-छिपे शादी का प्रस्ताव :-

निमिषा इन सब बातों को सोचते-सोचते गोविन्द के घर आकर दस्तक दी। गोविन्द ने ही आगे बढ़कर दरवाजा खोला। निमिषा ने देखा कि उसने बढ़िया सूट और उसी से मैच करती टाई पहन रखी थी। यह सब देखकर निमिषा ने गोविन्द से पूछा की आप कहीं बाहर जा रहे थे क्या ? मगर गोविन्द नहीं कहता है। गोविन्द ने फिर कमरे में चक्कर लगाने शुरू कर दी और बीच में ही रूककर निमिषा से पूछा की उसे सफर में कोई तकलीफ हुई क्या ? तब निमिषा मजाक से कहती है कि सिवाय भाग कर गाडी पकड़ने के और कोई नहीं। गोविन्द कुछ देर चक्कर लगाने के बाद एक मूढ़ा लेकर निमिषा के सामने बैठ जाता है और उससे पूछता है कि ब्लाऊज, साडी और अँगूठी कितनी देर में खरीदी जा सकेगी तो निमिषा ने बताया कि कोई बीस-पच्चीस मिनट में। निमिषा पूछती है कि यह सब चीजे क्या वह छोटे भाई के दुल्हन के लिए खरीद रहा है क्या ? गोविन्द कहता है कि ये सब चीजे वह निमिषा के लिए ही खरीदना चाहता है क्योंकि भाईसाहब छोटे भाई के शादी के सिलसिले में लुधियाना चले गये है और आज शाम वापिस आ जायेंगे। गोविन्द चाहता है कि भाई साहब आने से पहले वह निमिषा से शादी कर ले और उसने पुरानी अनारकली में आर्य समाज के प्रधान से बात कर रखी है। भाई साहब शाम को आ जायेंगे तो वह बता देगा कि उसने निमिषा से शादी कर ली है, तब राहो-वाली सगाई अपने-आप टूट जायेगी। मगर निमिषा कहती है कि वह स्कूल की कुछ स्टेशनरी खरीदने और नक्शे ठीक करवाने के उद्देश्य से चली आयी है, शादी करने के लिए नहीं। और वह चाचा को बताये बिना शादी नहीं कर सकती क्योंकि अगर वह ऐसा करेंगी तो चाचा बहुत अपमानित महसूस करेंगे। साथ ही उसकी दादी अभी जीवित है। फूफी और उनकी लड़कियाँ तथा दामाद और मिसेज शर्मा, उसकी अन्य सहेलियाँ और कनक आदि है। वह सब को इत्तला आज शाम को देगी और कल शादी के लिए

तैयार होकर आयेगी। निमिषा आगे कहती है की शादी को कोई आये या न आये लेकिन वह आयेगी। वह शादी कर रही है कोई चोरी तो नहीं कर रही है। चोरी-छुपके शादी करना उसे पसंद नहीं है। तब गोविन्द कहता है कि शाम को भाई साहब आ जायेंगे तो कल कुछ नहीं होगा। निमिषा गोविन्द की बात न मानकर कल सुबह आने का वादा करके चली जाती है। यह सब सुनकर गोविन्द कल कुछ न हो सकेगा कहकर हताश होकर मूढे पर बैठ जाता है।

निमिषा जब गोविन्द से बिदा होकर बाहर चली आयी तो उसका मन दिविधा स्थिति में था कि वह कनक से जाकर कल के बारेमें कह आये मगर उसने सोचा कि अगर कल भाई साहब आने के बाद गोविन्द मुकर गया तो वह कच्ची पड़ जायेगी। पहले तो कनक ने गोविन्द जैसे फटीचर आर्ट-टीचर से लौ लगाने से मना कर दिया था। निमिषा का मन फिर भी कहता था कि वह अगर कनक से कहेगी कि वह फिर भी गोविन्द से शादी करना चाहती है तो वह प्रजेण्ट खरीदने चल देगी। फिर उसने सोचा कि वह कनक और मिसेज शर्मा से कुछ नहीं कहेगी। अगर कल गोविन्द तैय्यार हो गया तो मिसेज शर्मा को फोन पर बतायेगी और कनक के यहाँ जाकर उससे मिल कर कहेगी। उसने स्टेशनरी खरीदकर तथा नक्शे ठीक करवाके सीधे कॉफी हाऊस आ गयी और वह फिर सोच में पड़ गयी कि वह गोविन्द से उसके कहने पर शादी कर दे और कल भाई साहब आकर जोर दे तो वह तोड़ देगा तब उसका क्याहोगा। वह कहीं भी मुँह दिखाने लायक नहीं रहेगी। गोविन्द भाई के कहने पर दूसरी शादी बाजे-गाजे से कर देगा तो उसकी क्या हालात होगी ? उसकी चोरी से हुई शादी का स्कैण्डल खड़ा होगा और वह रेनाला में नौकरी करती रह सकेगी ? एक नहीं अनेक प्रश्न निमिषा के सामने उपस्थित हो गये। उसे पहले तो गोविन्द पर गुस्सा आया, लेकिन दूसरे ही क्षण उसे उसकी कमजोरी पर दया हो आयी। वह सीधा कॉफी हाऊस से मिसेज शर्मा के घर गयी और उनको सब

13308
A

बताया तब मिसेज शर्मा ने भी कहा, "भले ही तुम्हारे चाचा विरोध करते और तुम उनके विरोध के बावजूद गोविन्द से शादी कर लेतीं, लेकिन उन्हें कान्फिडेंस में न लेना उनका अपमान करने के बराबर होता। चाचा ने तुम्हारे लिए जो किया है, उसे देखते हुए यह घोर कृतघ्नता होती। यदि गोविन्द पुरुष होकर भी कायर है और तुम नारी होकर भी वीर हो तो इसमें शर्म की क्या बात है। आइ एम प्राउड ऑफ .... आइ एक श्योर एवरी थिंग विल बी ऑल राईट।"[1]

निमिषा जब मिसेज शर्मा से बिदा होकर बस में बैठी तो उसका मन दुविधाहीन और शान्त हो गया था। उसे अपनी चाची की याद हो आती है। चाची जब भी मुड़ में होती तब निमिषा उससे पूछती कि अगर उसे किसी से प्यार हो जाये और वह लड़का उनकी जाति का न हो तो क्या चाचा मान जायेंगे ? तब चाची कहती कि वह अगर सच्चे दिल से तुम्हें प्यार करते है तो मान जायेंगे अगर न माने तो मैं उन्हें मना लूँगी। तब चाची की इस उदारता पर अचरण होता है और पिछली तमाम शिकायतें भूल कर निमिषा ने चाची को मन ही मन माफ कर दिया। मगर यह भी उसके दिमाग में आया कि वह अगर बाहर कहीं प्रेम-विवाह कर ले तो उनको एक पैसा भी खर्च न करना पड़ेगा यह भी चाची की स्वार्थ परकता उसके समझ में आयी। निमिषा का मन भर आया और उसे अपने दिवंगत माता-पिता की याद हो आयी कि वह अगर जीवित होते तो क्या वह ऐसा बोल्ड कदम उठाने की सोच भी सकती थी। निमिषा ने सोचा कि कल वह गोविन्द से मिलेगी वह अगर शादी के लिए तैय्यार होगा तो वह मिसेज शर्मा को फोन करेगी, कनक को जाकर बतायेगी और चाची को भी फोन कर देगी और अगर गोविन्द कुछ न कर सका तो वह उसे कहेगी कि वह आराम से शादी कर ले और उसकी चिन्ता न करें। चाहे वह जिंदगी भी कुँवारी रहे, पर इस संदर्भ में वह किसी रिश्तेदार का एहसान

---

१ उपेन्द्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ १६२

नहीं लेगी। आगे निमिषा यह तक सोचती है कि जिसे उसकी जरूरत होगी, जो उसे चाहेगा, उसी को वह अपना संगी बनायेगी।

गोविन्द और निमिषा में दरार :-

दूसरे दिन सुबह जब निमिषा गोविन्द के यहाँ पहुँची तब गोविन्द के चेहरे पर थकान महसूस होती है। गोविन्द उसे बैठने न कह कर वैसे ही बाहर ले आता है और चलते-चलते निमिषा को कुछ भी बोलने का मौका न देकर इधर-उधर के गप्पे चलता है। जब वह दोनों निमिषा के घर के एक फर्लांग पर आते है तब गोविन्द उससे विदा मांगता है। निमिषा के मन में उससे कुछ भी पूछने की इच्छा न थी मगर फिर भी वह पूछती है कि भाई साहब कल रात आ गये ? तब गोविन्द "हाँ" कहता है और अब कुछ नहीं होगा कहता है। निमिषा को उसके होनेवाली शादी पर आने के लिए कहता है तब निमिषा जरूर आयेगी कहती है। साथ-ही-साथ यह भी कहती है कि शादी के बाद गोविन्द उसकी पत्नी को भी लेकर रेनाला आने का आमंत्रन दे देती है। तब गोविन्द दोनों हाथ माथे पर ले जाता है और वह मुड़कर गर्दन झुकाकर तेज गति से लौट जाता है। निमिषा उसे आँखों से ओझल हो जाने तक देखती है। फिर एक लम्बी साँस छोड़कर घर की तरफ चल देती है। वहीं पर तिसरा खण्ड समाप्त हो जाता है।

गोविन्द का माला से विवाह :-

गोविन्द की शादी हो गयी है। गोविन्द अपने ससुराल (राहों नामक गांव) से दुल्हन तथा बारातियों के साथ लाहौर लौट रहा है। गोविन्द, दुल्हन (नवपरिणीता) तथा दाई अलग से ये तीनों सेकेण्ड क्लॉस के डिब्बे में बैठे है। जब गोविन्द अपनी दुल्हन का घूंघट उठाता है तब उसका मुख विवर्ण हो जाता है। गोविन्द गद्देदार सीट पर कुछ हताश होकर लेट जाता है। उसके सामने अतीत की एकके बाद एक करके घटनाएँ आ जाती है।

जब उसने निमिषा के सामने आर्य समाज मन्दिर में शादी करने का प्रस्ताव रखा तो उसने एक दिन की मोहलत माँगी थी। गोविन्द सोचता है कि निमिषा को पूर्व कल्पना दिए बीना तथा उसे विश्वास में लिए बीना ऐसा प्रस्ताव उसके सामने रखना महज एक रोमानी बचकानापन था। उसने एक दिन मोहलत माँगी तो यह उसकी तमाम रोमानियत के बावजूद ज्यादा जिम्मेदारी, व्यवहार-कुशलता और दृढ़ इच्छा शक्ति ही दिखायी देती है। कॉलिज से सोम आ जाता है जब उसे सब पता चलता है तब वह भी निमिषा का ही पक्ष लेता है। सोम गोविन्द से कहता है कि शाम को भाई साहब आ जाने के बाद वह भी गोविन्द के साथ मिलकर भाई साहब से तर्क करके भाईसाहब को मनायेगा। जब वह दोनों शाम के समय भाई साहब दुकान बंद करने पहले हिसाब-किताब कर रहे थे तब पहुँच जाते है। सोम भाई साहब को कई तरह के अटकलों से समझाता है और गोविन्द तथा निमिषासे शादी के लिए मान जाने का प्रस्ताव रखता है। भाई साहब भी अपने तर्क-कुतर्क जतलाते हुए कहते है कि हम जैसे निम्न मध्यवर्गीय लोगों को बडे घरों में रिश्ते करने से पहले अनेक दृष्टिकोण से सोच-विचार करना चाहिए उसमें निमिषा ज्यादा पढ़ी-लिखी है। दूसरी बात यह कि वह हमारे जाति से अलग जाति की है। दूसरे भाईयों की भी अभि शादी होनेवाली है इस शादी से उन पर असर हो सकता है। अन्तर्जातीय विवाह से रिश्तेदारों में बदनामी हो जायेगी और खानदार पर कलंक लग जायेगा। तब गोविन्द ने कहा कि आये दिन अन्तर्जातीय विवाह होते हैं। इस पर भाई साहब कहते हैं कि उसने तो सगाई नहीं करवायी थी, उसे गोविन्द ने ही सगाई करवाने पर जोर दिया था। पर सोम और गोविन्द दोनों मिलकर भाई साहब के हर तर्कों का खण्डन करते हैं तब अंत में भाई साहब भाभी पर फैसला छोड़ कर भाभी को मनवाने कोकहते हैं। जब तीनों मिल कर घर आते हैं और भाभी से सगाई तोड कर निमिषा से शादी की बात कहते है तब भाभी वह हंगामा मचाकर नाटक करती है कि उन सभी की बोलती ही बंद

हो जाती है, और निर्मिषा से शादी का विचार ही छोड़ देते हैं। गोविन्द को अपनी कमजोरी और बेबसी पर तरस आता है तथा निर्मिषा ने शादी का उस समय प्रस्ताव ठुकराने के कारण गुस्सा आता है। अंत में गोविन्द हताश होकर देवनगर चला जाता है। गोविन्द के देवनगर जाने से पहले भाई साहब उसे कहते हैं कि अगर उसे सगाई वाली लड़की शादी के बाद पसंद न आयी तो वह खुद उसकी पसंद से गोविन्द की तीसरी शादी करवा देंगे।

गोविन्द देवनगर जाने के बाद सविस्तार से निर्मिषा को पत्र लिखकर बताता है कि किस तरह उस शाम भाई साहब लुधियाना से आने के बाद हंगामा मच गया। भाभी ने किस प्रकार का नाटक किया। यह सब लिखकर अंत में कहता है कि ओम की शादी होने तक निर्मिषा को रुकने की सलाह देता है। गोविन्द यह भी लिखता है कि आते इक्कीस-बाईस तारीख को छुट्टी लेकर वह लाहौर आ जाये।

गोविन्द के छोट भाई ओम की शादी हो गयी और उसकी बीवी एक दिन लुधियाना रहकर लाहौर आयी तो गोविन्द उसके रूप-सौन्दर्य को देखता ही रह गया। गली-मुहल्लेवालियाँ उसकी भाभी को बधाईयाँ देती और अपने देवर के लिए इतनी सुंदर बहू ढूँढ लाने पर उसकी प्रशंसा भी करती है। गोविन्द जब अपनी छोटी भाभी का रूप-सौन्दर्य देखा तो उसे पहली बार यह एहसास हुआ कि सौन्दर्य में कितना आकर्षण होता है। जब उसे यह भी पता चला कि उसकी भी होनेवाली दुल्हन ऐसी ही सुन्दर है और मैट्रीक में फर्स्ट डिवीजन में पास हुई है। यह सब सुनकर गोविन्द के अन्दर का निर्मिषा से शादी करने का संकल्प कमजोर हो जाता है। निर्मिषा तीन दिन तक लाहौर में आकर गोविन्द का इंतजार करती है मगर गोविन्द उसे मिले बीना ही व्यस्तता का बहाना बनाकर देवनगर चला जाता है और वहां जाकर चुप्पी साध लेता है। तब निर्मिषा

ही उसे पत्र लिखना बंद कर दिया है। तब गोविन्द उसे पत्र में लिखता है कि अब बहुत देर हो गयी है, उसके होनेवाले साले साहब काश्मिरा से शादी के लिए आ गये हैं। शादी का महिना तय हो गया है। अब सगाई तोड़ने का कुछ तो कारण होना चाहिए। आदि-आदि लिखकर निर्मिषा को शादी में आने को कहता है। तब जवाबी पत्र में निर्मिषा भी गोविन्द को आश्वस्त होकर शादी करने को कहती है। अंत में यह भी कहती है कि सब ठीक हो जायेगा। गोविन्द को शादी के लिए हार्दिक शुभ कामनाएँ देती है।

जब जालंधर आ गया तब गोविन्द ने अपने भाई सोम को दुल्हन के पास सैकेण्ड क्लास में बिठाकर वह बारातियों में जा बैठा। उसका ख्याल था कि जब वह बारातियों में बैठा देखकर भाई साहब पूछेंगे कि वह इधर क्यों आ बैठा है तब वह कह देगा कि दुल्हन असुन्दर है और वह दुल्हन के साथ एक दिन भी काट नहीं सकता। भाई साहब गोविन्द से कुछ नहीं पूछते तब वह खुद ही कहता है कि वह बारातियों में बैठेगा। भाई साहब इस पर भी कुछ नहीं कहते तब गोविन्द दोस्तों में बैठकर हार टौली का थोड़ा-थोड़ा साथ देकर अंत में खिड़की के पास आकर बैठ जाता है। बाहर देखते देखते गोविन्द आत्मसमृत्ति में खो जाता है। उसे पहली शादी के कई प्रसंग याद आते हैं। किस तरह उसने शर्तें मनवाकर वाहगात रस्मों के मनाने से इन्कार कर दिया था। अभी हुई शादी के भी प्रसंग याद आते हैं कि उसने एकदम भावनाहीन ढंग से, केवल सहज प्रतिक्रियावश, वह सब कार्य संपन्न करता रहा। जैसे शादी उसकी नहीं, किसी दूसरे की हो रही थी और वह दुल्हे के स्थान पर कुछ क्षण के लिए आ बैठा हो। वह यह भी सोच रहा था कि उसने देवनगर से रेनाला लिखे पत्र में होनेवाली बीवी के सुन्दर होने का बखान किया था। जब वह लाहौर जायेगा और वहा स्वागत में ठहरी औरतो में निर्मिषा होगी और वह दुल्हन को देखेगी तो क्या सोचेगी। मगर जब वह लाहौर घर पहुँच जाता है तो वह महिलाओं

में निमिषा उसे नहीं दिखायी देती। वह थोड़ा सुस्थीर हो जाता है। माँ के पैर छुकर आशीर्वाद लेता है। उपर जा कर चारपाई पर लेट जाता है।

गोविन्द की माँ दुल्हन को देखकर सीढ़ियाँ चढ़कर उपर आयी और तनतनाने लगी कि यही हूर परी लायी है कांता गोविन्द के लिए। तब भाई साहब पुछते है क्या बहु सुन्दर नहीं है ? तब माँ दुल्हन का नख-शिख वर्णन करती है और यह भी कहती है कि उसे कोई बीमारी है। उसके गालों पर बड़ी-बड़ी झाँइयाँ है और रंग भी सावला गया है। तब गोविन्द की भाभी रोने लगती है। वह कहती है कि राहों वालों ने उसके साथ धोका-धडी किया है। उसे एक लड़की दिखायी औरी दूसरी ही ब्याही गयी है। तब यह सुनकर भाई साहब भी गोविन्द को देवनगर भाग जाने की सलाह देते है और कहते है कि वह दुल्हन के भाई को फंसाने जुर्म में चार-सौ-बीसी के मामले में कोर्ट खिंचेंगे। तब गोविन्द कहता है कि अब क्या फायदा होगा ? आखिर तकलीफ तो दुल्हा को ही होगी। जो भी है वह उसे स्वीकार कर लेगा। और अंत में वह सब लोग कंगने की रस्में के लिए नीचे आ जाते है। जब यह कंगने खेलने की रस्म खत्म हो जाती है तब निमिषा का वहां प्रवेश हो जाता है। निमिषा नमस्कार करती है और गोविन्द के पास आकर ठरहती है तब गोविन्द दुल्हन का घूंघट उठाता है। निमिषा शगुन का पाँच रूपया दुल्हन के हाथ में रखकर बधाई देकर चलने को होती है तब गोविन्द की भाभी निमिषा को मुँह मिठा करवाके जाने की बिनती करती है। भाभी गोविन्द से निमिषा को उपर ले जाकर बैठाने को कहती है। गोविन्द निमिषा को कहता है कि मेरी जिन्दगी तो बर्बाद हो गयी है, आप मिठाई तो खाती जाइए। तब निमिषा गोविन्द का कंधा थपथपाकर सब ठीक हो जायेगा कहती है। कल गोविन्द को दुल्हन को साथ लेकर खाना खाने के लिए उसके घर आने की दावत देकर चली जाती है।

गोविन्द जब दूसरे दिन सुबह नींद से जग गया तो उसने देखा कि सुबह की धूप चारों ओर खिल गयी है कमरा पूरा खाली है। उसे निर्मिषा के घर नाश्ते के लिए जाना है। जल्दी-जल्दी तैयार होकर माला को भी चलने के लिए कहता है तब भाभी कहती है कि पडोस की महिलाएँ दुल्हन को देखने आ रही है, इसलिए दुल्हन बाहर जा नहीं सकती। गोविन्द अकेला ही बाहर निकलता है। रास्ते में उसे रमकृष्ण मिल जाते हैं तब उनको गोविन्द शादी की सभी कहानी इतिवृत्त बताता है। रमकृष्ण भी गोविन्द के कहते हैं कि जब उसने माला से शादी की है तो उसे माला के साथ कुछ दिन रहकर देखना चाहिए कि वह कैसी है। रमकृष्ण यह भी कहते है कि गोविन्द शुरू में लक्ष्मी से भी ना खुश ही था लेकिन बाद में उसकी तारीफ करते न थकता था। उसी तरह माला को भी उसने एक मौका देना चाहिए। रमकृष्ण आगे यह भी कहते है कि भारतीय नारी की यह विशेषता है कि वह जिस घर में भी जाती है उसी घर के तौर-तरीके सीख लेती है, उनके मुताबिक अपने आपको ढाल लेती। उसे एक कोशिश करनी चाहिए।

गोविन्द जब रमकृष्ण से छुट्टी पा कर निर्मिषा के घर पहुँचा तो सुबह के दस बज गये थे। उसने कॉल-बेल बजायी और खडा रह गया तब उसे पूरी रात नींद न आने की और जब देर रात सो गया तो ठराबने सपने देखने की याद में खो जाता है। निर्मिषा की चाची गोविन्द को उपर ले जाकर कमरे में बिठाकर चली जाती है। निर्मिषा थोडी देर में आ जाती है। निर्मिषा नमस्कार करके कहती है कि हमने तो आपका और भाभी का सुबह नाश्ते पर इंतजार किया। आप भाभी को साथ लेकर आना चाहिए था। तब गोविन्द कहता है कि दुल्हन को देखने पड़ोस की महिलाएँ आ रही है इसलिए वह नहीं आयी। निर्मिषा चाय के लिए पूछती है तब गोविन्द बताता है कि उसने तो अभी नाश्ता तक नहीं किया है। तब निर्मिषा बडे आश्चर्य से पूछती है कि ग्यारह बज रहे है और आपने अब तक नाश्ता तक नहीं किया। और वह परम उत्साह से किचिन की ओर चली जाती है।

निमिषा आमलेट और तौस गोविन्द के लिए तैयार करवा लायी। साथ ट्रे में चाय का सामान भी सजा लायी और गोविन्द के साथ अपने लिए भी एक प्याला बनाया। दोनों एक-दूसरे के सामने बैठे थे परंतु दोनों में कोई विशेष बात नहीं हुई। अचेतन रूप में दोनों सोच रहे थे। गोविन्द को यह यकीन हो गया कि निमिषा के मन में उसके बारेमें अब भी उतना ही आदर है। गोविन्द निमिषा से बिदा लेते समय गौना लेकर कल वापिस आने के बाद माल पर खिली धूप में घूमने तथा कॉफी हाऊस में जाकर कॉफी पीने का वादा करके चला आता है। निमिषा गोविन्द को नीचे तक छोड़ने आती है और गोविन्द को आँखो से ओझल होने तक देखती रहती है। गोविन्द चौक में आकर ताँगा पकड़ता है और घर आकर उसी ताँगे में दाई और नव-परिणीता पत्नी माला को लेकर स्टेशन आता है। पूरी यात्रा में वह मौन रह कर निमिषा और उसकी भावुकता तथा उसके पत्र-व्यवहार के बारेमें सोचता है। साथ-ही-साथ गोविन्द यह भी सोचता है कि वह जितना भी सोचता है, कई बार क्षणिक आवेग में वह उससे उलटा आचरण करता है। वह अपने आवेगों पर नियंत्रन पाने के बारे में सोचता है।

दूसरे दिन सुबह सास और सालियों के जारे देने के बावजूद भी दो-तीन दिन रहने से इन्कार कर देता है और माला को साथ लेकर लहौर वापिस आता है। वह यात्रा में माला से अपने और निमिषा के संबंधो के बारे में सब कुछ बताता है। गोविन्द माला से कुछ महिनों या कुछ हफ्तों के लिए उसे न छेडने की बिनती करता है। गोविन्द यह भी सोचता है कि वह घर जाने के बाद सुहाग रात नहीं मनायेगा मगर घर जाने के बाद वह उसके उलट ही आचरण करता है। घर आकर माँ और भाभी पर सुहाग की सेज न सजाने के कारण

गोविन्द जब अपने सुहाग कक्ष में आकर नव-परिणीता माला को समझाता है कि इस विवाह से उसकी मनस्थिति कुछ ठीक नहीं है और छः महिने तक माला उसे न छेडे। गोविन्द बाकी तमाम बातें माला को बताकर

उसे सहकार्य करने की बिनती करता है कि जब तक उसका अशांत मन शांत नहीं होता। माला मानती नहीं गोविन्द को वह अपने सहिलियों द्वारा उसकी की हुई पूजा का किस्सा भी बतातीं है और हट करके बैठ जाती है। तब गोविन्द मजबुर होकर अनचाहे भाव से माला को साथ लेकर सो जाता है। इसी बीच उसे माला उसका पूरा वातावरण याने माला की पढ़ाई, उसकी टूटी हुई सगाई, उसके गालों पर पड़ी बडी-बडी काली झाँइयाँ आदि का भी पता चलता है। माला की सहेलियाँ तथा उनकी सेक्स संबंधि धारनाएँ आदि बातों की जानकारी गोविन्द को मिलती है। उसके पत्नी की मानसिकता का भी पता उसे चल जाता है।

सुबह जब गोविन्द जग जाता है तब वह देखता है कि उसकी पत्नी नाली के खरे पर बैठ कर रात की शलवार धो रही है, यह देखकर गोविन्द को गुस्सा आता है। गोविन्द माला को कुछ कहे इससे पहले निमिषा का आगमन होता देख माला शलवार लिए वहाँ से भाग जाती है। निमिषा अन्दर आकर नमस्कार करती है और आज रात की गाड़ी से रेनाला जाने की बात करती है। निमिषा गोविन्द और माला को रेनाला आने का निमंत्रन देती है। गोविन्द कहता है कि अगर माला चाहे तो वह उसे साथ लेकर रेनाला आयेगा। निमिषा को नीचे बिठाकर जब गोविन्द माला से कहता है कि निमिषा आयी है और वह रेनाला आने का आमंत्रन दे दिया है तब माला रेनाला जाने तथा निमिषा के पास जाकर बैठने से इन्कार कर देती है। और उलटा-सीधा बकती है। गोविन्द तैयार होकर नीचे आता है और निमिषा को साथ लेकर कॉफी हाउस पहुँच जाता है। कॉफी पीते पुए वह निमिषा को माला के बारे में बताता है। तब निमिषा गोविन्द को समझाती है और यह भी कहती है कि वह अब उसे यहाँ से आगे पत्र नहीं लिखेगी और गोविन्द भी उसे पत्र न लिखे। निमिषा आगे कहती है कि माला के साथ वह पूरी दयानतदारी से साथ निभाने की कोशिश करें। वह इसमें सफल होनी की कामना भी करती है। गोविन्द निमिषा से कहता

है कि उसने तो शादी कर ली है, अब निर्मिषा का शादी करने के बारे में कुछ सोचा है या नहीं। तब निर्मिषा गोविन्द से कहती है कि वैसे शादी करने का उसका कोई विचार नहीं है। उनके स्कूल के सेक्रेट्री आकर चाचा से मिले है और प्रोफेसर ध्याने के बारे में उन्होंने चाचा से बात भी चलायी है। चाचा ने निर्मिषा पर फैसला छोड़ दिया है कि अगर प्रो. ध्यान निर्मिषा को पसंद है तो उन्हें कोई इतराज नहीं है। तब गोविन्द प्रोफेसर ध्यान के अच्छाई के गुण गाकर उनके उज्वल भविष्य की भी बात करता है। मगर निर्मिषा कोई उत्साह न दिखाकर अपनी उदासी प्रकट करती है। गोविन्द और निर्मिषा कॉफी हाऊस से बाहर आते है। गोविन्द माला से निभाने की पूरी कोशिश करने का वादा करते हुए निर्मिषा को वह अब पत्र न लिखने की भी बात करता है। गोविन्द का यह कहते हुए कण्ठ भरकर आता है और वह निर्मिषा को प्रणाम करके बिना आँखे मिलाए तेज-तेज घर की तरफ चला जाता है। यहीं पर चौथा खण्ड समाप्त हो जाता है।

गोविन्द ने शादी के लिए ली हुई छुट्टियाँ अब खत्म हो गयी थी। सोच-सोच कर वह बेहद परेशान था। गोविन्द ठीक से निर्णन लेने में असमर्थ था। वह इस शादी से सक्त नाराज था। उसका विचार था कि अगर बीवी सुन्दर ना सही लेकिन समझदार होती तो भी वह उसके साथ चला लेता। उसे आनेवाला पूरा भविष्य अंधकार मय दिखायी दे रहा था। गोविन्द नव-परिणीता पत्नी माला को लाहौर में ही छोड़कर अपने लड़के तथा वैद्य चचेरे भाई अशोक को साथ लेकर देवनगर आया हुआ था। अशोक का इरादा था कि देवनगर नयी बस्ती है इसलिए उसे अपनी वैद्य की प्रैक्टीस जमाने बहुतक कुछ चान्स है। गोविन्द ने माला को कमरे का बहाना बनाया था और उसे कहां था कि जब तक नये कमरे का कोई इंतजाम नहीं होता तब तक वह लाहौर रहे।

गोविन्द ने देवनगर आने के बाद न न करते हुए भी रात को निर्मिषा को एक लम्बा पत्र लिखा। उसमें गोविन्द ने पत्नी माला के बारे में तमाम शिकायते लिखी। अपनी कमजोरी को भी स्पष्ट रूप में स्वीकार कर निर्मिषा को कहां कि वह उसे पत्र नहीं लिखना चाहता था उसे रहा न गया। गोविन्द ने कहां कि उसने पत्नी माला के साथ कुछ रातें बितायी उसने जो कुछ भुगता है उसे स्पष्ट रूप में लिखना उसकी मूर्खता ही कहलायेगी मगर वह मजबूर है। इस बात की वह निर्मिषा से क्षमा भी मांगता है। अंत में कहता है कि अब उसने पक्का निर्णय ले लिया है कि वह माला को छोड देगा। इसके आगे वह माला जैसी गंवार, असमझ, फूहड़ तथा कुरूप, कामूक पत्नी के साथ जीवन बसर करना उस जैसे कलाकार के लिए असंभव है। इस पत्र के बाद वह माला को भी पत्र लिख रहा है। आदि-आदि। गोविन्द निर्मिषा का पत्र लिखकर पूर्ण होते ही माला को भी पत्र लिखता है कि वह अब आगे उसके साथ जीवन बसरकरने में असमर्थ है। उसने फैसला (निर्णय) ले लिया है कि वह माला से अलग हो जायेगा। माला को कुछ उदाहरण भी देता है कि उसकी एक सहेली मधुमती अपने पति से अलग होकर अपना जीवन खुद बनाकर समाज में कुछ मान-सम्मान पाया है। उसी तरह तुम भी आत्महत्या आदि के खयाल मन से निकालकर अपने पैरों पर खडे रहने की कोशिश करों। चाहों तो तुम आगे पढ़ सकती हो। उसके लिए मैं कुछ मदद भी कर सकता है। अगर मदद न चाहती हो तो तुम्हारे पास जितने गहने हैं उसे बेच भी दो तो तुम बी.ए. तक तो पढ़ सकती हो। आगे यह भी लिखता है कि खाना कम खाकर अपने-आपको और रोगी तथा कुरूप न बनाओ। कुछ व्यायाम भी करो और सुन्दर बनने की कोशिश करो। इसके आगे मेरे साथ जीवन बीताने का खयाल अपने मन से निकाल दो। आदि बाते लिख कर वह पत्र गोविन्द ने चचेरे भाई अशोक के पास देकर उसे लाहौर भेज दिया और कहां कि वह पत्र अशोक खुद माला को पढ़ कर सुनाये। माला यदि पत्र सुनकर राहों जाना चाहे तो वह या सोम उसे छोड़ आये।

अशोक को गाड़ी में बिठाकर जब गोविन्द वापस कमरे में आया तो उसने निमिषा का पत्र फिर एक बार पढ़ा तो उसने महसूस किया कि इस तरह से पत्र लिखना यह तो उसकी निमिषा के सामने अपनी लाचारी प्रकट करना ही है। गोविन्द के मन में उपजे अहंकार ने वह पत्र निमिषा को न भेजकर उसे अपने पास ही रखा। गोविन्द माला के पत्र या कोई निर्णय का बड़ी बेसब्री से इंतजार करने लगा। मगर चार-पाँच दिन बाद माला ही गोविन्द के भाई और माँ को साथ लिए लाहौर से देवनगर आयी तो गोविन्द उसे देखकर हैरान रह गया।

गोविन्द और माला में बेबनाव :-

गोविन्द ने माँ से उसकी खुशहाली पुछी और सफर में कोई तकलीफ तो नहीं हुई यह भी पूँछा। गोविन्द ने घर में दिन भी ठीक से सामान रखवाया और कई बार भाग-दौड़ करके घर का कुछ जरूरी सामान भी खरीद लाया। जब वह सब मिल कर खाना खाले तब गोविन्द अपने कमरे में आकर लेट गया। गोविन्द को अभी नींद नहीं लग गयी थी मगर वह सोने का नाटक कर रहा था तब माला बर्तन मांजकर गोविन्द के पास आयी। माला ने सीधा गोविन्द के पैरों पर हाथ रखकर उसके पिण्डलियाँ दबाने लग गयी तब गोविन्द ने माला को डाट दिया। गोविन्द ने आगे कहां कि उसको नींद खासी कच्ची है। वह एक बार जग जाय तो दोबरा जल्दी नहीं आती। वह दिन भर भाग-दौड कर थक गया है और उसे न छेडे सोने दे। माला उससे सटकर ही सोती है और दोनों बाहें उसके गले में डाल कर गोविन्द को कस देती है। तब गोविन्द गुस्से में आकर माला को पेर धकेल देता है। दोनों में तू-तू, मैं-मै होती है गोविन्द माला को कसकर एक झापड लगा देता है, तब माला जोर शोर से रोने-चिल्लाने लगती। गोविन्द उसे डरा धमकाकर शांत कराके अंत में माला को साथ लेकर सोता है और उसकी काम-तृप्ति कर देता है। गोविन्द और माला में यह खेल

आये दिन रोज हो जाता है। गोविन्द हर शाम माला से दूर रहने की कोशिश करता है मगर माला जबरदस्ती से गोविन्द को मजबूर करा के उसे काम-क्रिडा के लिए तैयार कर देती है। गोविन्द भी यंत्र की भांति यह सब करता है। गोविन्द और माला में कभी घूमने को लेकर तो कभी कपडे पहन ने तथा सजने-संवरने, तो कभी छोटी-मोटी बातों को लेकर संघर्ष छिड जाता है। गोविन्द की माला से कहता है कि इस मकान का मालिक आ रहा है और घर को खाली करवाने का बहाना बनाकर लाहौर छोड़ आता है। भाई साहब से लाहौर में कहता है कि वह अब इसके आगे माला के साथ नहीं रह सकता। गोविन्द भाई साहब से यह भी कहता है कि वह माला को पत्र लिखकर उसे राहों उसके मायके ले जाये। गोविन्द आगे यह भी कहता है कि राहों से कोई न आये तो सोम के हाथों माला को राहों उसके मायके छोड़े आये। गोविन्द ने मन-ही-मन पूर्ण रूप से निश्चय किया था कि वह अब माला से अलग हो जायेगा। गोविन्द माला को लाहौर छोड़ कर देवनगर आकर सुख की सांस लेता है। गोविन्द की यह खुशी एक हफ्ते के अंदर ही गायब हो जाती है क्योंकि माला गोविन्द के चचेरे भाई अशोक के साथ फिर से देवनगर आ जाती है।

गोविन्द का माला से छुटकारा :-

छठे और अंतिम खण्ड का आरंभ गोविन्द के पत्र से हो जाता है। गोविन्द अपने दिल्ली स्थित मित्र हर भजन को पत्र लिखकर पश्चाताप व्यक्त कर रहा है कि मैंने आप की बात नहीं मानी। आपने कहाँ था कि भाभी लड़की के सौन्दर्य की कितनी भी क्यों न तारीफ करें मगर एक नजर उस लड़की को देखे बगैर कभी शादी के लिए हाँ मत कहना। आपने यह भी कहाँ था कि मैं अपनी मन पसन्द लड़की को ही करूँ। तुमने अपनी मिसाल दी थी और बताया था कि तुम कैसे माँ की बातों में आ कर ठगे गये। गोविन्द यह भी लिखता है कि मैंने तुमसे वैसा ही करने का वादा

तक किया था। मगर अंत में कोशिश भी की, लेकिन मै नाकाम रहा। एक कुरूप, फुहड़ बीवी गले में पड़ गयी। पिछले देढ़-दो महिने में मैंने जो यातना पायी है उसे में शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाता। उस फुहड बीवी से पीछा छुडाने के लिए मेरी लगी-लगायी नौकरी तक छोड़नी की नौबत आयी। उस फूहड़ बीवी से पीछा छुड़ाने के लिए मै ट्यूशन के सिलसिले एक सिक्ख ठेकेदार की पत्नी के साथ उनके बच्चों को पढ़ाने के लिए बंगलौर जा रहा हूँ। अंत मै यह भी लिखता है कि पत्नी को छोड देना भारी गुनाह है। न चाहकर भी मुझसे यह गुनाह हो रहा है। वह अब बच्चे से है। मगर मैंने अब फैसला कर दिया कि कभी-भी उसे पास फटकने न दूँगा। और आगे यह भी लिखता है कि मै आपने फैसले (निर्णय) पर अडिग रहूँ, मेरे हक में दुआ करना। और पत्र समाप्त कर देता है।

गोविन्द निमिषाको पत्र लिखने लेता है मगर शुरवात कहाँ से करें यह सोचता है। वह चाहता है कि पत्र छोटा ही लिखे और प्रभावी हो। उसके और निमिषा के मध्य जो दूरी आ गयी है, उसे भी कम कर दे या कम हो जाय। यह सोचते-सोचते उसे माला देवनगर वापस आ जाने के बाद की कई घटनाएँ उसके स्मृति पटल में आ जाती है। उसने किस तरह हर रात नरक यातनाएँ भुगती है। हर बार न चाहकर भी अनचाहत में अपना शरीर माला को सोप दिया है। अंत में माला से तंग आकर उससे छुटकारा पाने का पक्का निर्णय ले लिया। सरदारनी नरिन्दर कौर में गोविन्द को नौकरी छुटने का उपाय भी बताया कि प्रिंसिपल दिलजंग सिंह को अगर चार आदमियों के सामने उल्टी-सीधी सुना देगा तो शाम तक उसके घर नोटिस पहुँच जायगा। अंत में गोविन्द एक दिन स्कूल लेट आ जाता है तब उसे क्लास में प्रिंसिपल दिलजंग सिंह फटकार देते है, तब गोविन्द भी प्रिं, दिलजंग सिंह के कमरे की चिक को सुनाते हुए वाही-तबाही बकता है। शाक तक गोविन्द को एक महिने के अन्दर कहीं दूसरी जगह नौकरी देखने का नोटिस मिल जाता है। गोविन्द ने बंगलौर ट्यूशन लेने जाने का

निर्णय पक्का कर लिया और पत्नी माला को उसके सभी गहने जेवरात और सामान के साथ उसके मयके भेज दिया। गोविन्द ने पत्नी माला से हमेशा के लिए छुटकारा पाया।

गोविन्द निमिषा को पत्र में लिखता है कि उसने माला को छोड़ दिया है। उसकी नौकरी भी छूट गयी है। वह अब ट्यूशन के सिलसिले बंगलौर जा रहा है। जिंदगी के तमाम नरक यातनाओं से उसने अब छुटकारा पाया है। अब वह आजाद है। आगे लिखता है कि बंगलौर जाने से पहले उसके दिल की हसरत है कि वह एक बार निमिषा से मिलना चाहता है। वह गोविन्द को निराश न करें यह विनंती भी करता है। उसका अन्तर्मन निमिषा-निमिषा पुकारता है। यहीं पर फिर से गोविन्द और निमिषा के मिलन की भूमिका बंध जाती है। उपन्यास समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष :-

अश्क जी के अन्य उपन्यासों की तरह "निमिषा" उपन्यास में पात्रों की भरमार नहीं है। इस उपन्यास की कथावस्तु सिमित दायरे के अन्दर ही है। इसमें प्रमुख पात्रों के रूपमें गोविन्द, निमिषा तथा माला है। इनके बाद आनेवाले पात्रों में गोविन्द के बडे भाई, छोटा भाई सोम, भाभी, निमिषा की सहेली कनक, चाचा-चाची, मिसेज शर्मा आदि सहायक या गौण रूप में ही आते है। ये पात्र कथावस्तु को कहीं-कही आगे बढ़ाने का ही काम करते है। उपन्यास के कथावस्तु में यह पात्र अपनी कोई खास छाप नहीं छोड़ पाते।

"निमिषा" उपन्यास की कथावस्तु गोविन्द, निमिषा और माला के बीच ही गुंथी गयी है। प्रथम पत्नी मृत्यु के उपरांत एक ऐण्डल के डर से गोविन्द ने बड़े भाई से कह कर सगाई करायी है। इसी बीच वह निमिषा के करीब आता है। गोविन्द जब निमिषा के संपर्क में आता है

तब वह जानता है कि निर्मिषा ही उसके जीवन साथी बनकर कला को बढ़ावा दे सकती है। गोविन्द एक कमजोर और दुलमुल विचारोंवाला व्यक्ति है। वह सोचता कुछ, करता उसके विपरीत। निर्मिषा धीर-गम्भीर और दृढ विचारोंवाली महिला है। वह जानती है कि गोविन्द एक फुहड, दुलमूल विचारोंवाला, कायर और कमजोर व्यक्ति है। गोविन्द उसके लायक नहीं है। मगर एक बार जब वह गोविन्द को दिल दे बैठती है तब उसमें कोई बदलाव आता नहीं दिखता। गोविन्द का स्वभाव स्वार्थ भरा ही दिखता है। गोविन्द ठीक से निर्णय लेने में असमर्थ है। वह न तो सगाई तोड़ना चाहता है और न निर्मिषा को अपनाना। गोविन्द में निर्णय क्षमता की कमी है। वह अपने छोटे भाई के पत्नी का सौन्दर्य देखकर और मंगेतर के सौन्दर्य का बखान सुनकर फँस जाता है और सगाई वाली लड़की याने माला से ब्याह करता है। वह माला से ब्याह करके फस जाता है और दुःखी बन जाता है। अंत में वह माला से तंग आकर उससे छुटकारा पाना चाहता है।

माला एक अर्ध-शिक्षित, कुंठित स्वभाव वाली महिला है। उसकी समय पर शादी न होने के से सेक्स के बारेमें अपने आप पर नियंत्रण न रख पाने के कारण गोविन्द को उसके इच्छा के विरुद्ध बार-बार सम्भोग करने पर मजबूर करती है। दमित वासना के कारण पति के मनोभावों को न समझकर पति की घृणा का शिकार बनती है। इंत में पति द्वारा त्यागी जाती है।

गोविन्द माला को त्याग कर निर्मिषा को फिर से अपनाना चाहता है। गोविन्द ने ब्याह करने के बाद भी निर्मिषा का गोविन्द पर पहले की तरह प्यार बरकरार है। वह निर्मिषा थी - क्षणिक आवेग में न कोई निर्णय लेने, न बदलने वाली। किसी गरही, लेकिन तेज नही की तरह वह ऊपर से शान्त, और शाम्य दिखाई देती थी और उसके अन्तर में तेज बहने वाली धारा का पता पाना कठिन था। उसमें जबरदस्त इच्छा शक्ति दिखायी देती है।

तृतीय अध्याय

"निमिषा" उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण"

उपेंद्रनाथ अश्क जी के द्वारा लिखा गया "निमिषा" उपन्यास एक सामान्य मध्यवर्गीय स्थिति का चित्रण करता है। "निमिषा"उपन्यास में किये गये पात्रों का चरित्र-चित्रण देखने से पहले उपन्यास में चरित्र-चित्रण का क्या महत्त्व है, यह देखना जरूरी हो जाता है।

पात्र अथवा चरित्र-चित्रण का स्वरूप :-

वैसे देखा जाए तो उपन्यास का मूल विषय मानव और मानव जीवन का चित्रण होता है। पात्रों के चरित्र-चित्रण के सहारे उपन्यासकार जीवन के विविध पक्षों को प्रस्तुत करता है। डा. प्रतापनारायण टंडन उपन्यास में चरित्र-चित्रण के बारे में लिखते हैं - "सामान्य रूप से चरित्र-चित्रण के अंतर्गत लेखक जिन बातों पर मुख्य रूप से ध्यान देता है उनमें जाति, वर्ग या व्यक्ति का प्रतिनिधित्व, पात्र का आन्तरिक और बाह्य व्यक्तित्व, उसके व्यक्तित्व की सामान्य और सूक्ष्म विशेषताएँ उसकी आकृति, वेशभूषा, वार्तालाप की शैली, भाषा आदि हैं।" [१] पात्रों के व्यक्तित्व के संबंध में होनेवाली टंडन जी की यह टिप्पणी अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण है।

पात्रों के व्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आन्तरिक। आन्तरिक पक्ष का संबंध व्यक्ति की मानसिक एवं बौध्दिक विशेषताओं से होता है और बाह्य पक्ष के उद्‌घाटन के लिए लेखक विवरण शैली का प्रयोग करता है।

१. डा. प्रतापनारायण टंडन - "हिंदी उपन्यास कला" - पृष्ठ-१६६।

चरित्रों के प्रकार :-

चरित्रों के अलग-अलग दृष्टिकोणों से अलग-अलग भेद होते हैं। मुख्य भेद तो वर्गगत या सामान्य पात्रों का होता है। जो पात्र अपनी जाति के प्रतिनिधि होते हैं वे टाईप या सामान्य वर्गगत या प्रतिनिधि पात्र कहे जायेंगे। ये पात्र अपनी निजी विशेषता लेकर समाज में आते हैं। वे सामान्य लोगों से कुछ अलग ही होते हैं। इसी प्रकार चरित्रों का दूसरा विभाजन स्थिर या गतिशील या परिवर्तनशील पात्रों का है। डा. गुलाबराय के अनुसार - "स्थिर चरित्रों में बहुत कम परिवर्तन होता है और गतिशील चरित्रों में उत्थान और पतन अथवा पतन और उत्थान दोनों ही बातें होती हैं।"[1] डा. गुलाबराय के द्वारा बताए गये स्थिर और गतिशील पात्रों के भेद का और अधिक विश्लेषण करते हुए डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त ने व्यक्तिप्रधान पात्र, वर्गप्रधान पात्र, स्थिर चरित्र और गत्यात्मक या परिवर्तनशील पात्र इस प्रकार चरित्रों के प्रकार किये हैं।[2] डा. गुलाबराय जहाँ दो ही प्रकार मानते है वहाँ डा. गुप्त जी चार प्रकार मानते हैं।

चरित्र-चित्रण की विधियाँ :-

उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए उपन्यासकार कई तरह की शैलियों अथवा विधियों का प्रयोग करता हैं। कभी-कभी वह स्वयं अपनी ओर से पात्रों का वर्णन करता है अथवा कभी अन्य पात्रों के भाषण के द्वारा या क्रियाकलाप द्वारा चरित्र-चित्रण करता है। इन विधियों को क्रमशः विश्लेषणात्मक [Analytical] और अभिनयात्मक या नाटकीय [Dramatic] कहते हैं।

१. डा. गुलाबराय - "काव्य के रूप" - पृष्ठ-१६३।
२. डा. शान्तिस्वरूप गुप्त - "पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत" - पृष्ठ-३६८।

चरित्र-चित्रण की विधियों के संदर्भ में डा. शान्तिस्वरूप गुप्त ने लिखा है - "चरित्र-चित्रण की विधि कोई भी हो, पर उपन्यासकार का कर्तव्य है कि वह पात्र का क्रमिक विकास प्रस्तुत करें। आरंभ में पात्रों के कतिपय गुण-दोषों का उल्लेख कर तदुपरांत विविध परिस्थितियों, प्रभावों, व्यक्तियों, अनुभवों और प्रतिक्रियाओं के मध्य उसके चरित्र का विकास दिखाए।"[1] गुप्त जी का मन है कि आकस्मिक चरित्र परिवर्तन अविश्वसनीय होता है, दुष्ट का एक रात में सज्जन हो जाना संभव तो है, परंतु सामान्य नहीं है। अतः लेखक को उससे बचना चाहिए। यदि चरित्र में परिवर्तन दिखाया जाय, तो वह क्रमिक, स्वाभाविक और अल्प होना चाहिए।

नाटकीय विधि :-

नाटक में चरित्र-चित्रण अलग ही प्रकार से किया जाता है। उस चरित्र-चित्रण में नाटककार का अस्तित्व प्रकाश में नहीं आता। वह अन्य पात्रों के जरिये ही किसी पात्र का चरित्र-चित्रण करता है। कभी-कभी पात्र स्वयं भी अपने आप का विश्लेषन कर देता है। यह भी नाटकीय विधि कहलाती है।

विश्लेषणात्मक विधि :-

यह विधि कभी गुत्थियाँ सुलझाने में सहायक होती है किन्तु इसकी अतिशयता अच्छी बात नहीं होती। उपन्यासकार बार-बार बीच में आ जाता है और कथावस्तु के प्रवाह में बाधा बन जाता है।

१. डा. शान्तिस्वरूप गुप्त - "पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांत" - पृष्ठ ३६७।

चरित्र-चित्रण के गुण :-

चरित्र-चित्रण में संगति, सजीवता, स्वाभाविकता आदि गुणों का होना आवश्यक है । पात्रों के चरित्र-चित्रण में परिवर्तन उपन्यासकार की इच्छापर निर्भर न रहकर परिस्थितियों पर निर्भर रहना अच्छा होता है ।

सारांश रूप में हम कह सकते हैं कि चरित्र उपन्यास में महत्त्वपूर्ण होता है । चरित्र-चित्रण की कला लेखक की महानता की कसौटि बन गयी है ।

अब उपर्युक्त बातों के आधार पर हम "निमिषा" उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण देखेंगे । "निमिषा" उपन्यास में तीन पात्र मुख्य रूप में हैं और दो पात्र गौण । यें पात्र निमिषा, गोविंद, कनक आदि प्रमुख पात्र हैं और माता, लक्खी ये गौण पात्र हैं ।

प्रमुख पात्र :-

१. निमिषा -

उपेन्द्रनाथ अश्क जी के "निमिषा" इस उपन्यास की नायिका निमिषा है । निमिषा एक मध्यवर्गीय परिवार की है । निमिषा में कई चरित्रिक विशेषताएँ पायी जाती हैं, जिन्हें हम निम्नलिखित रूप से विभाजित कर सकते हैं ।

बचपन -

निमिषा का बचपन अत्यंत ही सुख में बीता है । उसका घराना बहुत बड़ा था । उसके दादा बच्छोवाली लाहोर के साहुकार थे, उसके नाना शेखुपुरे के बहुत बड़े जमींदार थे, मामा - मौसा विलायत से होकर आये थे । लेकिन उसे उसके माता-पिता बहुत ही छोटी उम्र में छोंडकर चले गये । मामा जायदाद

को लेकर झगड़ते रहें । नानी के पास वह दो साल जैसे - वैसे रह गयी लेकिन उसके चले जाने के बाद वह एक मामा के घर से दूसरे मामा के घर में शटलकॉक की तरह फेंकी जाने लगी । मामा-मामियों के दुर्व्यवहार से तंग आकर वह अपने एडवोकेट चाचा को खत लिखती है और वह उनसे प्रार्थना करती है कि वे उसे लाहोर ले जाएँ ।

उसका बचपन अत्यंत लाड-प्यार से युक्त था । उसके माता-पिता उसे बचपन में अत्यंत प्यार किया करते थे । वह लड़कपन में अत्यंत वाचाल खिलंदरी और शैतान थी इसलिए दीदी उसे आँधी कहती थी । वह लड़कपन में लडकों को भी पीट देती थी । लेकिन चाचा के पास आ जाने के पश्चात वह शांत हो गयी ।

जब वह चाचा के पास आयी तो उसके चाचा उसे स्कूल में दाखिल करना चाहते थे लेकिन उसकी पढ़ाई बीच-बीच में छूट जाने के कारण अब उसे अपने से कम उम्रवाली लडकियों के साथ बैठना अखरता था । इसलिए उसे घर में ही ट्युशन लगा दी गयी और मिडिल के इम्तिहान में जिले में वह अव्वल आयी तो उसकी शादी के सपने देखनेवाली उसकी दीदी और फुफा चुप हो गयी । मैट्रिक और एफ.ए. में भी फर्स्ट डिवीजन में पास हुई और उसने छात्रवृत्ति पायी थी ।

कॉलिज जीवन -

निमिषा एफ.ए. करने के लिये कॉलिज में जाती है । उसमें दिखावा और ठिठोरापन नहीं है । उससे आसानी से दोस्ती नहीं की जा सकती । निमिषा कक्षा में सर्वप्रथम रहती, प्रिंसिपल की चहेती छात्रा: कविता करनेवाली कॉलिज मे मेगजीन की सम्पादिका, किसी से ज्यादा मेल-जोल न रखनेवाली और कक्षा में प्राय: चुप रहनेवाली ऐसी है ।

व्यक्तित्व -

वह एक अत्यंत गंभीर लड़की है जिसके होंठ पतले, चेहरा नुकीला और किंचित रूखा है लेकिन उसकी मुसकान उसके सारे चेहरे को उद्भासित कर जाती । जब शादी के बाद गोविंद उससे मिलने चला आता है तो उसे निमिषा कैसी लगती है इस बात को लेखक ने निम्नलिखित रूप में चित्रित किया है - "गोविंद ने आँखें उठायी । कंधेपर तौलिया फैलाये, उसपर अपने लम्बे गीले बाल डाले, सफेद सिल्क साड़ी ब्लाउज में वह उसे नये खिले गुलाब सी ताजा और हवा के झोंके - सी स्वच्छ लगी । उसके इस सद्य: स्नात रूप को वह क्षणभर देखता ही रह गया । " [१]

अध्यापिका -

जब निमिषा की नौकरी रेनाला जिला मिण्ट गुमरी के हायस्कूल में हेड मिस्ट्रेस के रूप में लगती है तो वह कुछ नियम बना लेती है । वह कमेटी के अध्यक्ष या सेक्रेट्री या किसी सम्मानित सदस्य अथवा तहसिलदार किसी की भी पार्टी में शामिल नहीं होती है। वह अत्यंत सादा लिबास पहनती है और पाउडर तथा सुर्खी से परहेज करती है । इसी वजह से उसके कार्यकुशलता की ही नहीं तो उसके चरित्र की भी गरिमा सभी पहचान लेते हैं । उसका एक रोब उनपर पडता है । इसी वजह से जिस गाँव में लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता था वहाँ अब माता-पिता अपनी लडकियों को भेजने लगे । वह होशियार, कुशल अध्यापिका होने के साथ ही एक सुयोग्य हेडमिस्ट्रेस है ।

व्यवहारी एवं कार्यकुशल -

निमिषा की कार्यकुशलता और व्यवहार क्षमता से गोविन्द भी प्रभावित हुआ जब उसने अपने और गोविन्द के बारे में नाम न लेते हुए शादी की बात चायी -

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-२१४ ।

से पूछती है तो चाची कहती है कि वह उसकी बात का बुरा नहीं मानेगी । अगर चाचा नाराज हो जाए तो वह उन्हें मना लेगी । वे मान जायेंगे क्योंकि वे निमिषा से प्यार करते हैं । पहले तो चाची की इस उदारता के कारण वह मानो उनपर न्योछावर होना चाहती है परंतु जब उसकी व्यावहारिक बुध्दि उसे उनका स्वार्थ दिखा देती है कि उन्हें एक पैसा भी खर्च न करना पडेगा, तो उसका मन कड़वा हो जाता है । जब गोविन्द अचानक उसी वक्त शादी करने के लिए उसे तैयार करने लगता है तो निमिषा सभी को बताने की बात तो करती ही है साथ ही, एक दिन की मोहबत माँग लेती है । जब गोविन्द उसके इस कार्य के बारे में सोचने लगता है तो वह कहता है - "इसका यही मतलब है कि अपनी तमाम रोमानियत के बावजूद ज्यादा जिम्मेदार, व्यवहार कुशल और दृढ इच्छाशक्तिवाली है । " [१]

मिलनातुर -

जब से निमिषा ने गोविन्द की गजल, उसकी चित्रकारी आदि के बारे में सुना है, तब से वह उससे मिलने के लिए आतुर रहती है । एक बार जब उनका परिचय भी नहीं हुआ है और वह ताँगे में बैठकर जा रही है तो उसे वह दिखाई देता है । वह चाहती है कि वह ताँगे से उतरकर उससे बात करें लेकिन वह डर के मारे ऐसा नहीं कर पाती । फिर जब प्रदर्शनी में जान-बूझकर उसकी सहेली कनक उसका परिचय गोविन्द से नहीं करवाती तो भी उसे बहुत गुस्सा आ जाता है । जब उसे नौकरी मिलती है और वह रेनाला चली जाती है तो उसके पहले एक रविवार को कनक के साथ गोविन्द से मिलने चली जाती है तो गोविन्द भी देवनगर में नौकरी के लिए चला गया है यह जानकर वह उसका पता लेने के लिए उसके भाई के पास चली जाती है । पता सिर्फ मन-ही-मन याद कर वह रेनाला जाते ही गोविन्द को खत लिखती है ।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-१७३ ।

वक्त की पाबंद -

जब निमिषा गोविन्द को पत्र लिखती है तो वह उन्हें आनेवाले शनिवार के बाद के शनिवार अर्थात जिस दिन १७ सितम्बर है, उस दिन लाहोर आने का निमंत्रण देती है । जब गोविन्द उसे लाहोर में शादी का निर्णय लेकर बुलाता है और उसकी रेल मिस हो जाती है तो वह लारी से चली जाती है परंतु समय पर पहुँच जाती है । जिस दिन उसके भाग्य का निर्णय शादी या पूरी उम्र कुँवारापन होने वाला होता है तब भी वह वक्त पर ही पहुँचती है । जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेती ।

अन्य गुण -

निमिषा जब गोविन्द को खत लिखने लगती है तो वह उसके साथ आत्मीयता से बर्ताव करती है । साथ-ही-साथ खत की भाषा में उसका संयम दिखाई देता है । जब गोविन्द उसके सामने अचानक शादी का प्रस्ताव रख देता है तो वह दृढता के साथ यह बता देती है कि वह सभी को बताये बिना शादी नहीं करेगी और उसे एक दिन की मोहलत चाहिए । चाहे गोविन्द उसे यह बताता है कि कल कुछ न हो सकेगा तब भी वह अपने निर्धारित काम के लिए चली जाती है । जब चाची उसकी स्वयं की हुई शादी का बुरा न मानेगी और चाचा को भी मना लेगी यह बात स्वयं चाची कहती है तो उसकी तेज बुध्दि उसे समझा देती है कि चाची का स्वार्थ है । जब शादी के बाद निमिषा को गोविन्द खत लिखता है तो वह उसमें लिखता है - "तुम मजबुर इरादोंवाली लड़की हो, मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, तुम मेरी जगह होती तो डंके की चोट अपनी-सी कर लेती, लेकिन मैं परिवार में बंधा, कमजोर आदमी हूँ ।"[१]

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-१८१ ।

गोविन्द के शादी के पश्चात वह न खुद उसे कोई खत लिखती है और न गोविन्द को ही लिखनेके लिए कहती है । साथ ही वह अत्यंत समझदार, भावुक एवं दयालू भी है । अपनी शादी के पश्चात गोविन्द जब निमिषा के बारे में सोचते लगता है तो वह कहता है - "वह निमिषा थी - क्षणिक आवेग में न कोई निर्णय लेने, न बदलनेवाली, किसी गहरी, लेकिन तेज नदी की तरह वह उपर से शान्त, स्थिर और सौम्य दीखती थी और उसके अन्तर में तेज बहनेवाली धारा का पता पाना कठिन था । उसमें प्रबल इच्छाशक्ति थी और इस सब के साथ कुछ अजीब-सी व्यावहारिक सुरूचि। उसके मुकाबले में गोविन्द अपने को निहायत इम्पलसिव, आवेगशील और कमजोर पाता था । "[1] ऐसी दृढ इच्छाशक्तिवाली निमिषा विवाह के बारे में भी सोचती है कि चार मंत्र पढ लिए जाय और चार बच्चे हो जाए तो उसे विवाह नहीं कहा जा सकता ।

इस प्रकार कई आदर्श गुणों से युक्त निमिषा का चरित्र-चित्रण उपेंद्रनाथ अश्कजी ने इस नायिका प्रधान उपन्यास में किया है ।

२. <u>गोविन्द</u> -

"निमिषा" उपन्यास चाहे नायिका प्रधान उपन्यास रहा हो फिर भी उसमें नायक गोविन्द के चरित्र का विश्लेषण भी उपेंद्रनाथ अश्क जी ने उतनी ही प्रबलता के साथ किया है इसलिए गोविन्द का चरित्र भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है ।

<u>व्यक्तित्व</u> -

गोविन्द लाहौर का एक उभरता हुआ कलाकार है । वह चित्र बनाने के आलावा शेरो-शायरी भी करता है । जब निमिषा मिसेज शर्मा के घर जाने के लिए ताँगे में बैठती है और ताँगा चलने लगता है तो अचानक ही निमिषा को गोविन्द दिखाई देता है, जिसकी गजल उसने एक मुशायरे में सुनी है । वह उससे

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-१९४ ।

मिलना चाहती है पर वह अपने में ही व्यस्त चला जा रहा है। उसका व्यक्तित्व कुछ इस प्रकार है - "चौडा माथा, घुँगराले बाल, पतले होंट और चश्मे से झाँकती वही उदास आँखे। उसने सिर्फ भूरे रंग की खादी का लम्बा कुर्ता और लठ्ठे का तहमद पहन रखा था।"[1] उपन्यास में एक और स्थान पर इस उपन्यास में गोविन्द के व्यक्तित्व का वर्णन किया गया है। जब वह स्वयं अंतिम दिन अपनी प्रदर्शनी में लगी तस्वीरें देखने आता है तो निमिषा उसे देखती है कि उसने खुले कलर की धारीदार कमीज, ग्रे रंग की किंचीत क्रीजविहीन पेण्ट और पेशावरी चप्पल पहन ली है। परंतु उसके घुँगराले बाल, गेहुँआ रंग और गहरी उदास आँखें उन साधारण कपडों के बावजूद उसे कुछ अलग व्यक्तित्व प्रदान कर रही हैं। गोविन्द एक स्कूल में अध्यापक है और सिर्फ पचास-साठ रुपये महीना तनख्वाह पाता है।

चित्रकार गोविन्द -

गोविन्द स्वयं एक बहुत अच्छा चित्रकार है। उसने चित्रकला के क्षेत्र में बहुत ही प्रसिद्धि पायी है यहाँ तक कि उसके तीन चित्र प्रदर्शनी में भी चुन लिए गये हैं लेकिन फिर भी जब निमिषा उससे सुझाव माँगती है तो वह अपने आपको नौसिखुआ मानते हुए जन्मजात प्रतिभा और सीखी हुई कला इसमें क्या अंतर है यह बताना चाहता है। इसके साथ ही वह चित्रकारी करने से पहले ही निमिषा को कुछ संदेश देता है, जैसे किसी की आलोचना का बुरा मत मानना। धन अथवा यश की इच्छा न करना आदि। ये निमिषा को काफी मदद पहुँचाते हैं।

अकेलापन -

गोविन्द अपने आप को अत्यंत अकेला महसूस करता है। जब उसकी गजल का दर्द और उसके ठहाकों का खोखलापन निमिषा की समझ में आता है तभी से वह यह जानने के लिए उत्सुक है कि उसके जीवन की पीड़ा क्या है।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-१४।

गोविन्द की पत्नी डेढ वर्ष पहले लंबी बिमारी के बाद चली गयी । वह पहले उससे प्यार नहीं करता है । पूरे जीवन भर वह उसे सताता ही रहता है । परंतु उसके चले जाने के बाद वह उसका महत्त्व समझ पाता है । चार साल में से डेढ साल वह बिमार रही है । वह अत्यंत ही भोली-भाली, सीधी-साधी, हँसमुख, उदार और सहनशील पत्नी के रूप में सामने आती है । इसी वजह गोविन्द आज उसकी कमी को महसूस करते हुए अपने आपको अकेला मानता है । प्रकृति की ओर उसका झुकाव उसे देवनगर जैसे एकान्त स्थल में नौकरी करने पर विवश करता है ।

आत्मविश्लेषण -

गोविन्द की स्वभावगत विशेषता यह है कि वह बिना सोचे-समझे कोई निर्णय लेता है और बाद में हमेशा ही उसपर पछताता है । वह उन क्षणों में भावुक होकर अपने ही तर्क जाल में फँसता चला जाता है और उसके सारे निर्णय उसे गलत साबित होने लगते है । एक स्कैंडल से डरकर वह दूसरी शादी के लिए तैयार होता है और वह अनजानी, अनदेखी लड़की से ब्याह करने के लिए तैयार होता है लेकिन जब उसके जीवन में निमिषा आ जाती है तो फिर उसके द्वारा की गयी गलती का पता उसे चलता है । जब उसकी शादी हो जाती है तब उसके अंतर्मन में चल रही उलझन सपने के रूप में प्रकट होती है । उसके सपने में लक्खी [उसकी पहली पत्नी], निमिषा और फिर माला आ जाती है । फिर जब वह निमिषा के घर में नाश्ते के लिए चला जाता है, तब भी उसके दिमाग में सवाल-पर-सवाल आते हैं कि जब उसके भाई उसे देवनगर भाग जाने की सलाह देने लगते हैं तो वह वहाँ से भाग क्यों नहीं जाता है ? क्यों वह कुतर्क करने लगा ? उसमें ही अगर निर्णय लेने की शक्ति नहीं है तो निमिषा उसकी क्या मदद करेंगी ? इसलिए वह स्वयं ही आत्मविश्लेषन करता हुआ कहता है - उसकी यह मुश्किल है कि वह न सोच कर बात करता है, न समझकर कदम उठाता है । वह तुरंत संवेगों से परिचालित होता है और जितना कुछ उसने सोच

रखा होता है, कई बार क्षणिक आवेग में वह उससे उलट आचरण करता है। शादी के बाद वह स्विकार करता है कि वह आवेगी है परंतु वह अपना दोष भी दुसरों के सिर पढना चाहता है। वह कहता है कि सारा दोष उसका नहीं है। उसमें वह ठहराव नहीं है लेकिन भाई साहब ने उसका कसूर माफ नहीं किया इसलिए वे दोषी है और निमिषा की गलती यह है कि उसने अपने रिश्तेदारों को भावनाएँ और नौकरी को महत्त्व दिया। भाभी की गलती यह है कि जब भाई साहब मान गये तो वह अड़ गयी और उसने ओम की बीबी की सुंदरता की बात कहीं। माला के साथ भी वह निभा लेता परंतु उसमें जरा-भी संस्कार नहीं है।

सौंदर्य के प्रति आकृष्ट -

गोविन्द निमिषा को चाहता तो है परंतु जब उसे इस बात का पता चलता है कि सौंदर्य कितना आकर्ष है और साथ ही जिसके साथ उसकी शादी होनेवाली है वह तो पतली, छरहरी, अठ्ठरह-बीस वर्ष की लड़की है पढने-लिखने में भी होशियार है और मैट्रिक उसने फर्स्ट डिवीजन में पास किया है तो उसका मन डॉवाडोल हो जाता है और फिर वह निमिषा से कन्नी काटने लगता है। इसका मतलब यह है कि उसमें सिर्फ सौंदर्य का आकर्षण ही नहीं बल्कि पलायनवाद भी दिखाई देता है।

अन्य गुण -

चाहे कैसी भी हो जब माला के साथ गोविंद की शादी हो जाती है, तो वह हमेशा उसका विरोध करना चाहता है परंतु जब कभी उसके परिवार के साथ सदस्य माला विरोध करते तो फिर वह नियतिवाद को स्वीकार करते हुए हमेशा ही उसके साथ सहनुभूति के साथ पेश आता है। वह एक अच्छा बहानेवाज भी है। जब निमिषा का पहला खत उसे मिलता है और उसमें बार-बार लाहोर क्यों छोड़ा इस बात का जवाब माँगा जाता है तो वह कई

बहाने बनाता है । इसके साथ ही साथ जब वह फ्लंज करने का निर्णय लेता है और कर नहीं पाता है तो भी वह कई बहाने बनाता है । लेखक अपने प्रकाशकीय वास्तव्य में कहता है कि गोविन्द महज बोदा और ढुलमुल नायक नहीं है तो वह भावुक, आवेगी, अव्यावहारिक, भला और परिवार में बंधा कम निम्नवर्गीय युवक है । इस प्रकार उपन्यास के दूसरे प्रमुख पात्र के रूप में गोविन्द का चरित्र-चित्रण उपेंद्रनाथ अश्क जी ने उपर्युक्त मददों के आधार पर किया है ।

३] माला -

कथावस्तु के तीसरे महत्त्वपूर्ण पात्र के रूप में माला का चरित्र महत्त्वपूर्ण बन जाता है । माला एक मध्यवर्गीय परिवार की अंधश्रध्दाओं का पालन करनेवाली स्त्री है । इस पात्र के बारे में स्वयं लेखक ने ही आरंभ में प्रकाशकीय में लिखा है - इसमें भी भयानक नहीं यह लगभग सोलह आने यथार्थ है । इस बात को पढ़कर ही हमारे मन में एक सवाल आता है कि भयानक कही जानेवाली इस माला के चरित्र में ऐसे कौन से गुण इस नारी में है जिनके आधार पर उसे यथार्थ माना गया है ।

व्यक्तित्व -

गोविन्द तो पहले से शादी के लिए तैयार नहीं है लेकिन एक स्कैंडल से डरकर शाद के लिये हाँ कर देता है और जब वह निमिषा की और झुकने लगता है तो उसे वह बता दिया जाता है कि उसकी होनेवाली बीवी अत्यंत सुंदर है और वह कमजोर पड़ जाता है । लेकिन वह देखता है कि - "चौड़ा माथा, एकदम तिकोना चेहरा, बीच में काफी लम्बी तिखी नाक, पिचके कल्ले-चेहरे पर बेतहाशा पाउडर, होंठे पर गहरी सुर्खी और दोनों और गालों पर काफी बड़ी गोल काली झाईयाँ जेा उस पाउडर में से उभरकर और भी नुमाईयाँ हो गयी थी और निहायत बदज़ेब लगती थी । " [१] जिस गोविन्द ने सुंदर बीवी की

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-१८८-८९ ।

कल्पना कि, उसके नसीब में यह ऐसी चुडैल जैसी दिखनेवाली बीवी आ जाती है। उसके व्यक्तित्व को देखकर अत्यंत निराश हुआ गोविन्द फिर भी उसका साथ निभाने की कोशीश करता है परंतु उसमें और भी कई अवगुण हैं।

जिद्दी -

माला अत्यंत ही जिद्दी स्वभाव की है। सुहागरात के दिन अपनी जिद पुरी करावा के ही सो जाती है। गोविन्द उसे बार-बार समझाने की कोशिश करता है कि उसे किसी और से प्यार है तो भी वह उससे अपनी इच्छानुसार वह वसूल कर लेती है। जब वह उसे छोड़कर देवनगर चला जाता है और जाते ही उसे एक खत में न आने की हिदायत देता है तो वह तमाशा करके देवनगर चली जाती है औ. गोविन्द देखता है कि उसे कई बार समझाए जाने के बावजूद भी उसने अपने गालों पर ढेर-सा पाउडर और होठोंपर सुर्खी पोत रखी हैं। जब देवेसेना का वार्षिक सम्मेलन होता है तो माला उसे वहाँ चलने की जिद करती है लेकिन गोविन्द नहीं मानता जब की वह उल्टा उसे बातों में उलझाकर उसका चित्र बनाता है।

परिस्थिति अनुकूलता का अभाव -

माला में परिस्थिति के अनुकूल आचरण करना भी नहीं आता है। जब वह सास के साथ देवनगर चली आती है तो बढियाँ साड़ी पहनकर उसके साथ बाहर घुमने के लिए आग्रह करती है परंतु जब वह तैयार नहीं होता तो वह रूठ जाती उसके पति ने उसे छोड़ देने का इरादा जाहिर किया है और इसी वजह से वह उसे इस तरह रिझाने की कोशिश तो करती है परंतु जब कभी बिना वजह वह इस तरह बार-बार आग्रह करती है तो उसे लड़की ही मिलती है।

प्रणय की अति -

माला अत्यधिक भूखी स्त्री है। सुहागरात के ही दिन वह पूजा के बहाने पति को तीन बार तंग करती है और शांत होकर सो जाती है। इसके पश्चात तो हर रोज वह उसे शांत किये बिना सोने ही नहीं देती है। कभी-कभी तो गोविन्द कमजोरी महसूस करने लगता है तो वह निमिषा को लेकर उसे ताने देती है। लेकिन इसी वजह से उसका चरित्र एक वहशी चरित्र लगने लगता है। गोविन्द रात-रात घूमता है लेकिन माला के पास जाने से डरता है। लेकिन एक दिन क्रोधित होकर गोविन्द भी उसकी अत्यंत बुरी दशा कर डालता है। गोविन्द चाहकर भी निमिषा को यह सब नहीं बता पाता और उस पर हो रहे अत्याचार को सहता रहता है। यहाँ तक कि वह तीन बार माला को छोड़ने की कोशिश करता है। जब माला निमिषा को रण्डी कहती है तभी उसकी मानसिकता का पता हमें चलता है।

इस प्रकार एक अत्यंत कुत्सित, जिदवी, किसी भी तरह की शलीनता न होनेवाली मलिका न होनेवाली, अनुकूलन की क्षमता का अभाव होनेवाली, वासना की खान माला का चरित्र-चित्रण उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अत्यंत यथार्थ रूप में किया हुआ हमें दिखाई देता है।

गौण पात्र -

गौण पात्रों में सिर्फ दो ही पात्र आते हैं जिनका अधिक विश्लेषण किया गया है। - कनक और लक्खी। इसके अलावा और भी पात्र हैं जैसे मिसेज शर्मा, एडवोकेट खन्ना, चाची आदि। लेकिन अन्य गौण पात्रों के चरित्र का विश्लेषण उतना नहीं किया गया है।

कनक -

कनक निमिषा की एम. ए. में उसके साथ पढ़नेवाली सहेली है। कनक के पिता प्रो. बसंत लाल पंजाब विश्वविधालय में दर्शन के लेक्चरर हैं। उनका

परिवार अत्यंत साधन संपन्न परिवार है । कनक के पिता उसे एक अच्छी कलाकार बनाना चाहते है और उनके अनुसार उसका पति ऐसा हो जिसकी आर्ट में रूचि हो, ध्वनी हो आदि । लेफ्टिनेण्ट हरिश कनक पर मरता है । लेकिन कनक उसे पसंद नहीं करती । कनक को इस बात का गर्व है कि क्लास की सबसे मेधावी छात्रा निमिषा की वह सहेली है । वह एक सुख-सुविधा में पली लड़की है । वह "खुद-पसंद" है । उसके स्वभाव में एक तरह का अन्तविरोध दिखाई देता है इसीलिए कभी वह उदास तो कभी अत्यंत प्रसन्न इस प्रकार का उसका व्यक्तित्व है । उसे सभी पर नाराज होने का हक है परंतु उसपर कोई नाराज नहीं होना चाहिए । उसपर पाश्चात्य सभ्यता का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है । कनक जब गोविन्द की दर्द-भरी गजल का मजाक उडाती है तो निमिषा को अत्यंत बुरा लगता है । लेकिन वह उसके साथ तर्क नहीं करती क्योंकि यह अपनी सहेली की खु-पसंदी, अभिजात्य के मिथ्या गर्व और हाईब्रोपन से भी परिचित थी ।"

कनक मॅझले कद की, दोहरे शरीर की सुंदर युवती है । उसका मस्तक चौड़ा आँखें बड़ी-बड़ी सुंदर और मिलाफी तथा रंग गोरा है। उपर के होंठ पर बड़े हल्के, लगभग नजर न आनेवाले, सुनहरे रोएँ हैं । उसे अपनी चित्रकारी का बड़ा ही गर्व है इसलिए जब प्रदर्शनी में उसके तीनों चित्र बिक जाते हैं । [जिनमें से दो हरिश ने और तीसरा निमिषा को यकीन है कि प्रो. लाल की किसी छात्रा ने खरीदा होगा] तो उसे गर्व महसूस होता है और वह गर्व से बातें करने लगती है । जब वह अपन माँ के चित्र को बचनेपर गर्व महसूस करती है तो यह बात निमिषा को अच्छि नहीं लगती है । निमिषा जब कनक पर आरोप लगाती है की वह गोविन्द को चाहने लगी है तो वह उसपर बौखला उठती है । वह व्यंग्य के साथ कहती है कि तो प्यार के लिए एक स्कूल मास्टर ही शेष रह गया है ?

इस प्रकार अत्यंत लाड़-प्यार में पली निमिषा की सहेली कनक एक अलग ही प्रकार की कलाकार के रूप में हमारे सामने आती है ।

लक्खी -

लक्खी गोविन्द की पहली पत्नी है । डेढ़ साल पहले लगभग डेढ़ साल बीमार रहकर वह चल बसी है । वह शादी कर गोविन्द के पास रहने आयी तब उन दोनों में नहीं बनती थी वह पूरे जीवनभर उसे सताता ही रहा परंतु उसके चले जाने के बाद अब उसके हृदय में लक्खी के लिए प्यार जागृत हुआ है । गोविन्द यह भी स्वीकार करता है कि उसके चले जाने के बाद ही गोविन्द के चित्र एवं गजले सराही जाने लगी है । चार साल तक उन दोनों का साथ रहा परंतु इनमें से डेढ़ साल तो बिमारी में गला गया । चार साल वह उसे सताता रहा इस बात का उसे बेहद अफ़सोस है । जब निमिषा उसकी तस्वीर को देख लेती है तो - "एक सीधी, सरल हँसमुख युवती का बस्ट था, जिसने साडी और पुलोवर पहन रखा था । साड़ी का पल्लू पुलोवर की बायी ओर से निकलकर सिर के आधे हिस्से को ढँकता हुआ पीछे गायब हो गया था । बाल बायी ओर से कटे थे । वहीं क्लिप की मदद की से लहरिया सा बनाते हुए दायें कान को ढाँपे थे । वही कान की लौ से सुनहरी बुन्दा लटक रहा था । होंट असमंजस भरी मुस्कान में खुले थे, जिनमें से बत्तीसी झलक रही थी । " [1] इस प्रकार का व्यक्तित्व होनेवाली लक्खी में कई अच्छे गुण दिखाई देते है । गोविन्द उसे बचाने की हर संभव कोशिश करता है परंतु वह उसे बचा नहीं पाता है । अत्यंत दुःखी होकर गोविन्द अपनी पत्नी लक्खी के बारे में बताता है - "वैसी भोली-भाली, सीधी-साधी, हँसमुख और धरती की तरह सहनशील पत्नी मैं कहाँ से पाऊँगा और मैने जो भी चित्र बनाया, उसे लागों ने सराहा । " [2] जब गोविन्द निमिषा को अपनी ट्रेजेडी के बारें में बताता है तो वह उसकी उदारता की भी सराहना करता है । वह कहता है कि उसके बाद उसने शादी न करने का फैसला किया था लेकिन अब आवेग में सगाई कर पछता रहा है । जब उसकी शादी हो जाने के पश्चात तो और भी वह पछताने लगता है क्योंकि उसे ऐसी उदण्ड पत्नी मिलती है जिसकी वह कल्पना

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - "निमिषा" - पृष्ठ-६५ ।

२. - वही - - पृष्ठ-९२ ।

भी नहीं कर पाता । जो-जो बातें वह अपनी पत्नी माला से करता है, वह सोचता है कि अगर वे सारी बातें उसने अपनी लक्खी से कही होती तो लक्खी आत्महत्या कर लेती ।

इस प्रकार अत्यंत सहनशील स्त्री के रूप में लक्खी हमारे सामने आती है । लेखक ने सुंदरता के साथ उसके चरित्र का चित्रण किया है ।

इसके अलावा जो अन्य पात्र हैं, उनमें मिसेज शर्मा एक दृढनिश्चयी स्त्री के रूप में हमारे सामने आती है जो निमिषा को सही रास्ता दिखानेवाली साबित होती है । निमिषा के चाचा एड्वोकेट खन्ना एक अत्यंत भावुक हृदयी, उदार, सहनशील, पत्नी के आधीन, होशियार वकील आदि रूपों में हमारे सामने आते हैं । वे निमिषा से भी उसी प्रकार की सहनशीलता की अपेक्षा अपेक्षा करते है । वे मानते हैं कि निमिषा की चाची यदि पूहड़ है उसे कोई सलीका नहीं है तो निमिषा को समझदारी से काम लेना चाहिए क्योंकि वह पढ़ी लिखी है । निमिषा की चाची को फिल्में देखना, देर तक सोना पसंद नहीं करती । वह हर काम में चाची का विरोध करती है ।

इस प्रकार हम यह देखते है कि उपेंद्रनाथ अश्क जी ने इस उपन्यास के पात्रों के माध्यम से कथावस्तु को अपने उद्देश्य तक पहुँचाया । उपन्यास के प्रमुख पात्रों के चरित्र-चित्रण में लेखक अत्यंत सफल दिखाई देते हैं ।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि उपेंद्रनाथ अश्क जी हिंदी साहित्य के अग्रणी साहित्यकार के रूप में माने जाते हैं । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अनेक प्रकार के उपन्यास लिखे हैं । उनका हर एक उपन्यास एक विवाद का विषय रहा है । "निमिषा" भी इसके लिए अपवाद नहीं रहा । अनेक उपन्यासों पर अश्लीलता का आरोप लगाया जाता है । उनका "निमिषा" उपन्यास और "बड़ी-बड़ी आँखे" उपन्यास दोनों में ही समानता पायी जाती है ।

उनके "निमिषा" उपन्यास में कुछ घटनाएँ ऐसी भी हैं जो "बड़ी-बड़ी आँखे" में समान रूप से पायी जाती हैं । गोविन्द और निमिषा ये दोनों पात्र तो चन्दा और चन्दर के रूप में पायी जाती है ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी के "निमिषा" उपन्यास में तीन मुख्य चरित्र और अन्य सभी चरित्र गौण रूप में पाये जाते हैं । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने सभी चरित्रों का विकास अत्यंत ही सफलतापूर्वक किया है । जब उन से इन पात्रों की यथार्थता के बारे में पूछा जाता है तो वे उन पात्रों को यथार्थ बनाते हैं । उनके इस उपन्यास की नायिका "निमिषा" है और उसी को केंद्र में रखकर पूरे उपन्यास का ताना-बाना बुना जाता है । पूरा उपन्यास मानों निमिषा की ही कहानी है, अत: इसे नायिका प्रधान उपन्यास कहा जाता है ।

अश्क जी ने "निमिषा" के व्यक्तित्व के कई पहलूओं को हमारे सामने रखा है जैसे अध्यापिका, व्यवहारी एवं कार्यकुशल वक्त की पाबंद, मिलनातुर आत्मीय, संयमी, दृढ तेज बुद्धि भावुक, दयालु, समझदार आदि । उसके इन्हीं गुणों के कारण उसका चरित्र हमेशा ही एक गरिमामयी चरित्र दिखाई देता है । निमिषा का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जिस को ओर हमेशा ही शान्ति पाने के लिए गोविन्द भागता रहता है । वह उसके इन गुणों से प्रभावित है । जब कि गोविन्द के चरित्र में अकेलापन, चित्रकारी एवं कवि, चित्रकारी के सम्बन्ध में उसका ज्ञान, आत्मविश्लेषण, सौंदर्य के प्रति आकृष्ठ, बहानेबाजी, निर्णय, क्षमता कम, सहानुभूति से युक्त आदि गुण पाये जाते हैं । इसी आधार पर कोई उसे दुलमुल नायक कहता है तो प्रकाशकीय में ही लेखक उसे अस्वीकार कर देते हैं । बाला जैसी तो कोई स्त्री हो भी सकती है इस पर विश्वास नहीं होता ।

निमिषा की सहेली कनक, एडवोकेट खन्ना, चाची, मिसेज शर्मा जैसे पात्र इन्हीं तीन चरित्रोंपर प्रकाश डालने के लिए निर्माण किए गये हैं । कनक उच्चवर्ग की अहंभावना आदि को प्रकट करती हैं ।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि पुरे उपन्यास में जितने सारे पात्रों का निर्माण किया गया है वे मूलत: निमिषा के चरित्र को ही उजागर करते हैं ।

इन्हीं के माध्यम से कथावस्तु को अपने उद्देश्य तक पहुँचाने में लेखक सफल तो हुए हैं परंतु साथ-ही-साथ कुछ पात्रों की पुनरावृत्ति उसी प्रकार के चरित्रों की निर्मिति उन्होंने इस उपन्यास में भी क्यों की है ? इस बात का पता हमें नहीं चलता । बड़ी-बड़ी आँखों की कथावस्तु तो अलग है लेकिन उन्हीं चारित्रिक विशेषताओंवाले, लगभग उन्हीं परिस्थितियों में पले-बढे पात्रों का निर्माण उन्होंने क्यों किया, यही समझ में नहीं आता ।

इस प्रकार हम पूरे पात्रों का विश्लेषण करने के पश्चात इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि उपेंद्रनाथ अश्क जी अपने उपन्यास "निमिषा" में अधिकतर पात्रों का मानसिक विश्लेषण करने में सफल दिखाई देते हैं ।

— — —